ड्रैकुला की ड्रीमगर्ल

Dracula's Dream girl

Ram Binod Kumar

PART -1

ड्रैकुला की ड्रीम गर्ल

इस दुनिया में एक ऐतिहासिक ड्रैकुला हुआ था ,जिसे हम 'विलाद तृतीय ड्रैकुला के नाम से जानते हैं। जिसका जन्म सन् 1431 ई. में ट्रांसिल्वेनिया में हुआ था। यह आज के रोमानिया की राजधानी बुखारेस्ट के उत्तरी इलाकेमें स्थित है। रोमानिया के लोग आज भी उसे अपना (नेशनल हीरो) राष्ट्रीय नायक मानते हैं, क्योंकि उसने उस जमाने में सुपर पावर कहे जाने वाले उस्मानिया सल्तनत के सुल्तान मोहम्मद द्वितीय को भी युद्ध में हराकर उसे पीछे लौटने पर मजबूर कर दिया था। उसकी याद में रोमानिया के लोग प्रत्येक वर्ष 25 मई को ड्रैकुला डे भी मनाते हैं।

दूसरा ड्रैकुला 26 मई 1897 को प्रकाशित हुई ब्रेम स्टोकर की उपन्यास ड्रैकुला का नायक था, जो अपनी नुकीली दाँतों वाला , खून पीने वाला शैतान था।इस ड्रैकुला ने भी इस दुनिया में खूब धूम मचाया। जिसके बाद ड्रैकुला, ड्रैगन और इंसानों का खून पी जाने वाले अन्य पिशाचों की कहानियों की यह परंपरा और अधिक विकसित हुई।

मैं इस कहानी में आपको एक तीसरे ड्रैकुला की कहानी सुनाऊँगा, जो भी अपने नाम के अनुरूप अपने कुछ गुणों में, कुछ हद तक इन दोनों से मेल खाता है। इससे पहले की मैं अपनी कहानी शुरू करूँ, मैं आपको कहानी के शुरुआत की इस भाग में , उस ऐतिहासिक पुरुष विलाद तृतीय ड्रैकुला की कहानी सुनाऊँगा, जिसने पन्द्रहवीं सदी में अपना एक इतिहास रचा था।

भले ही मेरी कहानी के पात्र ड्रैकुला का उस ऐतिहासिक पुरुष विलाद तृतीय ड्रैकुला से कोई मेल नहीं है फिर भी यह नाम भी ड्रैकुला से ही प्रेरित है।

17 मई 1462 को खुद उस्मानिया सल्तनत का सुल्तान मोहम्मद द्वितीय वालीचिया को जीतने निकला था। जिसका शासक विलाद तृतीय ड्रैकुला का किशोरावस्था उसी के पिता के राज्य में एक बंदी शहजादे के रूप में बीता था।

सुल्तान की फौज ड्रैकुला की राजधानी के पास पहुंची, तो वहां एक मील से भी अधिक क्षेत्र में फैले हुए अर्ध गोलाकार क्षैत्र में भाले पर टँगे हुए बीस हजार के करीब तुर्क फौजियों की सड़ी-गली लाश दिखाई दिया। साडे मांस की बदबू से वातावरण सड़ांध हो रहा था।

सबसे ऊँचे भाले पर उस्मानिया सल्तनत के क्षेत्रीय अधिकारी हमजा पाशा और यूनानी कैटावोलिनोस की लाशें थी।

ड्रैकुला के बारे में कुछ इतिहासकारों का यह भी कहना है,कि उसे अपने दुश्मनों के मृत शरीरों के बीच उनके खून से सनी हुई रोटियाँ खाने में बहुत आनंद आता था।

आप सोच रहे होंगे, कोई इंसान इतना क्रूर कैसे हो सकता है ? तो अपने चिंतन को हवा दीजिए और मेरे साथ-साथ चलिए, हम विलाद तृतीय ड्रैकुला के बचपन और उसके जीवन के बारे में संक्षिप्त रूप से जानें।

ड्रैकुला का अर्थ ड्रैकुल का बेटा भी है। ड्रैकुल शब्द का अर्थ लैटिन भाषा में ड्रैगन भी होता है। ड्रैकुल लैटिन भाषा का शब्द ड्राकू से आया है, जिसका अर्थ है ड्रैगन।

विलाद तृतीय ड्रैकुला का पिता का नाम विलाद द्वितीय ड्रैकुल था। ड्रैकुला के दो भाई भी थे। बड़े भाई का नाम मेर्चा,और छोटे भाई का नाम रादो था। जिसे रादो दि हैंडसम भी कहा जाता था।

1421 ईस्वी से 1451 ईस्वी तक मुराद द्वितीय उस्मानिया सल्तनत का सुल्तान था। सुल्तान मुराद के दिल में ड्रैकुला के पिता विलाद द्वितीय ड्रैकुल के बारे में शक पैदा हो गया था।

जब इस बात की सफाई पेश करने के लिए, जब वे सुल्तान को सलामी देने उस्मानिया पहुँचे तो तुर्क फौजियों ने उन्हें शहर के दरवाजे पर ही पकड़कर जंजीरों से बाँध दिया। समझौते के तहत उसके दोनों छोटे बेटों ड्रैकुला और रादो को सुल्तान ने अपनी कैद में रखकर ,विलाद द्वितीय ड्रैकुल को उसके बड़े बेटे मेर्चा के सहयोग से अपने अधीनस्थ राज्य के रूप में शासन के लिए मुक्त कर दिया।

मजबूरी में पिता ड्रेकुल को सुल्तान की शर्त स्वीकार करनी पड़ी। उसने दोनों शहजादा की सम्मानजनक देख-रेख और शिक्षा-दीक्षा की जिम्मेवारी के साथ समझौते कर सब्र कर लिया।

ड्रैकुला और रादो दोनों भाइयों को कुछ महीने किले में कैदकर डराने-धमकाने के बाद फिर उन्हें विश्वास पात्र बनाने के लिए, जिससे वे भविष्य में वे सुल्तान के प्रति वफादार रहें और कभी विद्रोह न कर सकें इसके लिए उसी तरह की शिक्षण-प्रशिक्षण की जानकारी उन्हें दी जाने लगी थी।

उस समय वे दोनों वहाँ की स्थानीय भाषा भी नहीं बोल-समझ सकते थे। उनका धर्म भी अलग था।

दोनों भाइयों के मन में यह बात भी खटकती होगी, कि उनके पिता और बड़े भाई ने उन्हें यहाँ

अपनी वफादारी के तौर पर गिरवी रखकर अकेला छोड़ दिया गया है।

दोनों भाईयों के अलावे सर्विया के दो शहजादे भी उन दिनों सुल्तान के दरबार में बंधक के तौर पर मौजूद थे। शहजाद को अपने पिता के साथ संदिग्ध पत्राचार के आरोप में उनकी आँखें निकलवा दी गई थी। जबकि उन दोनों शहजादों कि बाईस वर्षीय बहन शहजादी 'मारा' उस समय सुल्तान मुराद की बेगम थी।

ड्रैकुला का प्रशिक्षण वहाँ उस समय के प्रसिद्ध उस्तादों ने किया। मशहूर कुर्ती दार्शनिक अहमद गुरानी को सल्तनत के उत्तराधिकारियों को भी प्रशिक्षण के दौरान कोड़े तक मारने का अधिकार था। उन्हें कुरान के अलावा अरस्तु का तर्कशास्त्र और गणित की शिक्षा भी दी जाती थी।

एक उपन्यासकार मैकनमी लिखते हैं , 'ड्रैकुला एक मुश्किल विद्यार्थी था, जिसे अपने गुस्से पर काबू नहीं रहता था ।उसे कई बार कोड़े मारे जाते थे।' वह अच्छी शक्ल-सूरत का मालिक भी नहीं था। उसके भाई को अच्छी शक्ल-सूरत पर दरबार में स्त्री-पुरुषों द्वारा खूब आकर्षण भी मिलता था। शायद वह इस उपेक्षा की भावना से भी खुद में हीन भावना का शिकार हुआ रहता हो।

पिता पर शक होने के कारण दोनों शहजादों के सिर पर तलवार लटकने लगी थी। दोनों शहजादों इसका गहरा असर हुआ। उसके मन में रहती होगी की पिता और भाइयों ने उनकी जिंदगी खतरे में डाल दिया है।

1447 ईस्वी में पिता और भाई का राजनीतिक कारणों से कत्ल हो गया। इसके बाद उस्मानिया के सुल्तान ने दोनों भाइयों को मुक्त कर दिया। फिर वह उस्मानी फौज में अधिकारी बनाया गया।

इतिहासकार मैकनली बताते हैं, '1456 ईस्वी में आसमान में एक ऐसा चमकता हुआ सितारा दिखाई दे रहा था, जिसे देखकर जंग, महामारी और प्राकृतिक आपदा की भविष्यवाणियां की जाने लगी थी।

अब पच्चीस वर्षीय विलाद तृतीय ड्रैकुला आठ वर्षों की कोशिशों के बाद अपने पूर्वजों की विरासत वालीचिया की गद्दी पर बैठने में कामयाब हुआ । इसके बाद एक महीने बाद ही उसकी वफादारी पर भी उस्मानिया सल्तनत के सुल्तान को शक होने लगा था। सुल्तान मोहम्मद ने वालीचिया में अपना प्रतिनिधि भेजा।

ड्रैकुला उस्मानिया सल्तनत की शर्तें तो मान लिया। मगर को अपनी पिता वाली गलती नहीं दोहराया, जो उन्होंने 1442 में खुद ही उस्मानी सल्तनत जाकर किया था।

इस समय सुल्तान मुराद का बेटा सुल्तान मोहम्मद उस्मानिया का सुल्तान था। जो विलाद तृतीय ड्रैकुला का हम उम्र भी था। जब वह उसके पिता के कैद में उस्मानिया में रहता था तब दोनों की शिक्षाएँ भी साथ-साथ होती थी ।

ड्रैकुला का राज्य बड़ा तो नहीं, मगर खूबसूरत जंगलों, झीलों और उपजाऊ मैदानों से भरपूर था। उसके महल का निशान आज भी है, जो कई बार तुर्कों के हाथों तबाह हुआ और पुनः निर्मित हुआ।

ड्रैकुला के हाथ में शासन की बागडोर आते ही उसने सख्ती के साथ शासन करना शुरू किया। जिसके कारण आवाम को महसूस हुआ की सुल्तान आताताई है। ड्रैकुला के अत्याचार का मकसद राज्य की ताकत अपने हाथ में लेना था। पश्चिमी यूरोप के कुछ राज्यों की तरह उसने भी एक ऐसी फौज बनाई जिसकी वफादारी सिर्फ उसके साथ होती थी।

ड्रैकुला कहता था , 'शहजादा घर में कमजोर हो तो, बाहर अपनी मर्जी नहीं कर सकता। इसलिए पहले दो साल उसने अपने पश्चिमी पड़ोसी हंगरी और पूर्वी पड़ोसी उस्मानिया सल्तनत को खुश करने की नीति अपनाई। शासकों को जल्दी बदलने के कारण इलाके की ताकत असराफियों के हाथ में जा चुकी थी, जिन्हें बूयार कहते थे। 1418 ई. के बाद आधी सदी में वालीचिया के शासक 12 बार बदले थे।

ड्रैकुला यह अच्छी तरह जानता था ,कि बूयार उस्मानीयों को खुश रखने में यकीन रखते हैं। इसके अलावा वालीचिया के उनसे पहले वाले शासकों के समर्थक भी राज्य में मौजूद थे। ड्रैकुला अपने बड़े भाई मेर्चा और अपने पिता की हत्या का बदला भी लेना चाहता था।

1457 ई. में लगभग दो सौ बूयार परिवार और कुछ खास पदाधिकारी ईस्टर समारोह के लिए उसके महल में एकत्रित थे। ड्रैकुला के सिपाहियों ने उन सब को पकड़कर बड़े लोगों को कील गाडकर शहर के दीवार के बाहर डंडो पर लटका दिया। कील गाड़कर मारने के कारण ही ड्रैकुला को 'विलाद द इम्पेलर 'भी कहा जाता जाता था। स्वस्थ लोगों को उसने शहर में पहाड़ी पर स्थित अपने पूर्वजों के खंडहर किले की मरम्मत करने में लगा दिया। इसे ड्रैकुला का किला कहा जाता है। किसी अधीनस्थ राज्य शासक के लिए इस तरह किला बनवाना दो ताकतवर पड़ोसियों हंगरी और उस्मानिया सल्तनत के आदेशों के खिलाफ था।

कहते हैं किले में एक ऐसा खुफिया रास्ता था, जिसके रास्ते 1462 ई. में सत्ता छीनने पर ड्रैकुला भाग निकला था।

इटली से ड्रैकुला के दरबार में कुछ दूत और व्यापारी आए हुए थे। ड्रैकुला के दरबार में उन्होंने तो अपनी टोपियाँ तो उतार दी ,मगर स्कल गार्ड नहीं उतारा। पूछने पर यह कहा कि यह गार्ड सिर के

साथ चिपका हुआ है। ड्रैकुला ने उन लोगों के सिर में कील यह कहकर ठुकवा दिया था ,कि ठीक है ,अब यह स्कल कार्ड और अच्छी तरह से सिर में चिपकी रहेगी। 1459 ई. के बाद उसने उस्मानी सल्तनत को टैक्स देना बंद कर दिया था। फौज के लिए उस्मानिया सल्तनत को हर वर्ष 500 लड़के देना भी बंद कर दिया था।

ड्रैकुला के राज में पैसे वाले लोग अपने पैसे के बल पर भी सजा से नहीं बच सकते थे । एक बार उसने एक किसान की पत्नी को इसलिए कील गाड़ कर मारने का आदेश दे दिया था ,क्योंकि वह अपने पति का कुर्ता छोटा बनाई थी । किसान यह कहकर ड्रैकुला से भीख माँगता रहा कि उसकी पत्नी से उसे कोई परेशानी नहीं है, उसे छोड़ दिया जाए। पर उसने किसान की एक भी न सुना। कहने लगा , 'नई पत्नी से उसे इससे भी अधिक सुख मिलेगा।'

शादी से पहले और पति के मृत्यु के पश्चात यौन संबंधों पर उसने सजा का प्रावधान कर रखा था। एक बार भिखारियों के गिरोह को उसने एक कमरे में बंद करवाकर बाहर से यह कहकर आग लगवा दिया था कि 'ये लोग दूसरे की कमाई पर गुजर-बसर करते हैं।'

1459 ई. में उसने दो उस्मानी अधिकारियों का कत्ल कर दिया। फिर उस्मानिया सल्तनत से उसकी औपचारिक जंग शुरू हो गई।

धर्म के नाम पर उसने यूरोप के दूसरी ताकतों से मदद माँगा, लेकिन ईसाइयों में ऑर्थोडॉक्स और कैथोलिक विचारधारा के नाम पर मतभेद था। उस समय उसे यूरोप से कोई सहायता नहीं मिली। फिर भी वह अकेला ही गुरिल्ला युद्ध करता रहा। एक बार उसने पोप को पत्र लिखा कि उसने तेईस हजार आठ सौ चौरासी तुर्कों और बल्गारों को मार दिया है। इसमें घर जला कर मारे गए लोग शामिल नहीं है।

17 मई 1462 को खुद सुल्तान वालीचिया जीतने निकला। परंतु ड्रैकुला के राजधानी के पास पहुँचने पर मीलों तक भाले पर टँगे हुए तुर्क सिपाहियों और अधिकारियों की लाशें देखकर उसने अपना मन बदल दिया।   उसने ड्रैकुला के भाई रादो के साथ कुटनीतिपूर्वक अपने सिपाहियों को सौंपकर वापस आ गया।

जनता ने अत्याचार मुक्त शासन की आशा में रादो को अपना समर्थन दिया। रादो को हंगरी का भी समर्थन प्राप्त था। हंगरी की सहायता से रादों अपने भाई की गद्दी पर कब्जा जमा लिया। फिर हंगरी ने ड्रैकुला को बंदी बना लिया।

इस बात के खिलाफ यूरोप में एक लहर उठी क्योंकि इससे पहले ही उसने उस्मानिया सुल्तान मोहम्मद द्वितीय को युद्ध से वापस लौटने को मजबूर कर यूरोप का हीरो बन गया था।

इसके बाद भी ड्रैकुला 12 वर्षों तक हंगरी के कैद में रहा। वहाँ पर भी उसे एक खास कैदी की तरह व्यवहार किया जाता था। कुछ दिनों बाद ही उसे दरबार में बैठाया जाने लगा। एक बार उस्मानी प्रतिनिधियों से वार्ता के दौरान हंगरी का बादशाह उसे उनके सामने दरबार में बैठाया। 1475 ई. में एक बार फिर रादो के हाथ से सता निकली तो हंगरी ने ड्रैकुला को ऑर्थोडॉक्स धर्म त्याग कर कैथोलिक धर्म अपनाने की बात पर समर्थन किया और 1476 ई. में एक बार फिर वह वालीचिया का गद्दी संभाला। उसी वर्ष दिसंबर में तुर्कों के साथ हुई लड़ाई में वह मारा गया।

फिर भी उसके कार्य भविष्य के लिए मील के पत्थर साबित हुए थे। आज वह 1918 ई. वालीचिया, माल्डोविया ट्रांसवोनिया के मिलने से बना देश मे रोमानिया का राष्ट्रीय नायक है। यह उस ऐतिहासिक ड्रैकुला की संक्षिप्त जीवन गाथा है। विस्तृत के लिए तो कई पुस्तकें भी कम पड़ जाएगी। परन्तु कई लोग उसे उसकी क्रूरता की पराकाष्ठा के लिए भी याद करते हैं। विभिन्न इतिहासकारों का उसके पक्ष-विपक्ष में विभिन्न मत है।

ड्रैकुला ने इंसानी शरीर में भाले गाड़कर मारने की सजा को और भी तकलीफ देने वाला बनाया। वो तेज नोक की बजाय भाले का मुँह गोल ही रखता था। उनको जमीन में गाड़कर इंसानों को उसके ऊपर बैठा देता।इस तरह इंसान के शरीर के दबाव से भाला आहिस्ता-आहिस्ता शरीर में धँसता चला जाता। जान निकलने में दो -तीन दिन लगते। 'इस दौरान उनके पूरे होश में कौवे उनकी आँखें भी निकाल लेते थे।'

एक ऐसा व्यक्ति जिसने उस्मानिया सल्तनत के विजेता सुल्तान मोहम्मद द्वितीय का मुकाबला करने में बहुत हिम्मत दिखाया था। लोग उसे विभिन्न रूपों में याद करते हैं।

PART -2

राजस्थान के अलवर जिले में एक गाँव था साँगाखेड़ा। वहाँ के जमींदार शूरवीर साँगा थे। उनकी इकलौती बेटी मेघा जयपुर से इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त करके अपने गाँव आई हुई थी। गाँव आने के कुछ दिन बाद वह एक दिन अपनी कुछ सहेलियों के साथ अपने गाँव की पहाड़ी पर स्थित मंदिर घूमने गई थी।

पहाड़ी पर मंदिर के रास्ते में ही एक किला का भग्नावशेष भी पड़ता था। सहेलियों के जिद के पश्चात वह भी उसमें घूमने चली गई थी। मंदिर और किले को घूमकर आने के पश्चात दूसरे दिन से ही उसके बंगले में रहस्यमयी घटनाएँ घटने लगी थी।

रात्रि को भोजन करने के पश्चात जब मेघा अपने कमरे में सो जाती थी, तो उसकी माँ अहिल्याबाई अपने घर का कार्य देखने और अपने पति की सेवा करने के बाद, जब अपने बेटी के कमरे में उसे देखने जाती, तब उसे उसका कमरा अंदर से बंद मिलता था।

सुबह पूछने पर मेघा अपने कमरा को बंद करके सोने से अनभिज्ञता प्रकट करती थी। कई बार रात्रि को अहिल्याबाई मेघा के कमरे का दरवाजा जोर-जोर से खटखटायी, पर अंदर से उसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं आती थी। और सुबह फिर मेघा उसी कमरे से दरवाजा खोलकर बाहर निकलती थी। वह खुद भी सोने से पहले कमरे का दरवाजा बंद करने से हर बार अनभिज्ञयता प्रकट करती थी। यह सब देखकर अहिल्याबाई अपनी बेटी को लेकर चिंतित हो गयीं थी, कि इतने जोर-जोर से दरवाजा खटखटाने पर भी आखिर मेघा दरवाजा क्यों नहीं खोलती है ?

कई दिनों तक तो उसके पति शूरवीर साँगा ने यह कहा की , 'मेघा गहरी नींद में सोने के कारण उसकी आवाज न सुनकर दरवाजा नहीं खोलती है। परंतु अहिल्याबाई को अपने पति के बातों पर विश्वास नहीं होता था। उसने जब रोशनदान से कमरे के अंदर अपनी बेटी की स्थिति की जाँच करायी , तो वह अपने पलंग पर ही नहीं थी। यह देख कर शूरवीर साँगा भी चिंतित हो गया। लेकिन उस रात की सुबह भी मेघा उसी कमरे से बाहर निकल कर आई।।

उसके माता-पिता उससे पूछने लगें, " तुम रात्रि को अपने पलंग पर नहीं थी, तो आखिर कहाँ थी ? "

इस बात पर मेघा ने कहा, " मैं तो भोजन के पश्चात पलंग पर ही सो गई थी।"

परंतु मेघा की बातें सुनकर शूरवीर साँगा और अहिल्याबाई को विश्वास नहीं हुआ। वे दोनों इस बात की तह तक जाने की योजना बनाने लगें।

दूसरे दिन अहिल्याबाई जल्दी से भोजन करने के बाद मेघा के साथ ही कमरे का दरवाजा अंदर से बंद करके उसके साथ सो गई। मध्य रात्रि से पहले शूरवीर सांगा की जिम्मेवारी मेघा के कमरे का दरवाजा खटखटाकर अंदर की स्थिति जानने की थी। परंतु आज भी शूरवीर सांगा द्वारा काफी देर तक दरवाजा खटखटाने के पश्चात भी दरवाजा अंदर से नहीं खुला। रोशनदान से झांकने पर पलंग पर केवल अहिल्याबाई ही अकेली सोई हुई थी। जल के छींटे फेंकने के पश्चात भी मध्य रात्रि में अहिल्याबाई की नींद नहीं खुली थी।

थक-हारकर शूरवीर साँगा अपने कमरे में आकर सो गया। सुबह होने पर माँ-बेटी दोनों उसी कमरे से बाहर निकल कर आएँ। दूसरे दिन कमरे का दरवाजा खुला रखा गया परंतु बाद में जब शूरवीर साँगा कमरे की वस्तुस्थिति जानने के लिए उस कमरे के दरवाजे पर गया , जिसमें उसकी पत्नी और बेटी आज दरवाजा को खुला छोड़कर सोई हुई थीं। परंतु कमरे का दरवाजा आज भी अंदर से बंद निकला। अहिल्याबाई खुद भी आश्चर्य करती थी कि आखिर ऐसा क्यों होता है ? उन्हें भी दरवाजा खटखटाने पर आवाज सुनाई क्यों नहीं देती है ? उनकी नींद क्यों नहीं खुलती है ?

उस कमरे के दरवाजे पर पहरेदारों का पहरा लगाया , जिसमें मेघा सोया करती थी। परंतु पहरेदारों को लगाने पर भी कोई फायदा नहीं हुआ। न जाने कब दरवाजा अंदर से बंद हो जाता था और रोशनदान से देखने पर मेघा अपने बिस्तर पर दिखाई नहीं देती थी।

दूसरे दिन मध्य रात्रि में शूरवीर साँगा ने कमरे के दरवाजे को तोड़ने का निर्णय लिया। जब दरवाजा खटखटाने पर नहीं खुला और मेघा भी अपने पलंग पर नहीं दिखाई दी ,तब दरवाजे को तोड़ा जाने लगा। दरवाजा को तोड़ने के क्रम में भी अंदर से किसी की नींद नहीं खुली। दरवाजा टूटने पर सबको आश्चर्य हुआ, कि अहिल्याबाई कमरे में अकेली सोई हुई थी।

अब तक भी उनके नींद में कोई खलल नहीं हुई थी। पर उस कमरे में मेघा का कहीं कोई अता-पता नहीं था। सबको आश्चर्य हुआ , आखिर मेघा रात्रि में कहाँ गायब हो जाती है ? सुबह होने पर मेघा फिर अपने कमरे से ही निकलकर आई। पूछने पर मेघा रात्रि में कहीं जाने और किसी अन्य घटना से रूबरू होने पर अनभिज्ञता प्रकट कर रही थी।

यह रहस्य शूरवीर साँगा के लिए एक समस्या बन गया था। अब वह कई लोगों से इस समस्या की बात बताकर सलाह लेने लगा था। उसकी पत्नी ने उसे अनुभवी तांत्रिक से इस बात की सलाह लेने की सुझाव दिया। जब उसने तांत्रिक से संपर्क कर सारी बातें बताया , तब तांत्रिक की बातें सुनकर वह दंग रह गया।

तांत्रिक ने कहा, " चौधरी साहब ! आपकी बेटी पर किसी ताकतवर शैतान का साया है। जो वह आपकी बेटी को, रात्रि में अपनी मायावी शक्ति से उठाकर ले कर चला जाता है। शायद अभी वह इसके शरीर से कोई साधना कर रहा है भविष्य में जब उसकी साधना पूरी हो जाएगी तब आपकी बेटी पूरी तरह उसके वश में हो जाएगी ,फिर यह मामला हमारे हाथ से निकल जाएगा। इससे पहले कि वह अपने मकसद में कामयाब हो हमें उसे रोकने के लिए उपाय करना होगा ।"

"आखिर अब इस समस्या का क्या हल है ? मैं तो बिल्कुल थक-हार गया हूँ ?"

"आप चिंता मत कीजिए। अगर आप कहें तो, मैं अपने गुरु को लेकर यहाँ आऊँगा और आपकी समस्या दूर करवा दूँगा। मैं खुद की शक्ति से वाकिफ हूँ, मुझमें तो इतनी शक्ति नहीं है , कि मैं उस शैतान का मुकाबला कर सकूँगा। पर हाँ ! मैं आपको वचन देता हूँ कि हमारे गुरु अवश्य ही आपकी बेटी को इन कष्टों से पार कर देंगे।"

उस तांत्रिक की बात सुनकर शूरवीर सांगा को कुछ आशाएँ बँधी। वह उस तांत्रिक से बोला, " महाराज ! आप जल्द-से-जल्द मेरी समस्या का निदान करवाकर मेरी बेटी को उस शैतान से बचा लीजिए ! मैं आपका यह उपकार सदा याद रखूँगा।"

वह तांत्रिक शूरवीर सांगा को अपना भरोसा देकर, अपने गुरु को लेकर आने की बात कह कर वहाँ से चला गया।

PART -3

तांत्रिक कमाल गिरि कई दिनों तक अपने गुरु के खोज में भटकता रहा,पर उसे उनकी कहीं भी खबर नहीं मिली। एक दिन वह उन्हें ढूँढने के क्रम में मार्ग में जा रहा था। तभी उसकी भेंट अपने गुरु भाई श्याम गिरी से हुई।

कमाल गिरि उनसे हाथ जोड़कर बोला, " ओम् गुरु भाई !"

" हरि ओम् कमाल जी ! और सुनाइए आपकी साधना कैसी चल रही है ?"

" गुरु भाई ! आपसे क्या छुपाऊँ,मैं गुरुदेव द्वारा बताई गई साधना से पथभ्रष्ट हो चुका था। संसारी क्षणिक प्रसिद्धि के लालच में , मैं ज्ञान मार्ग की साधना भटक कर वाममार्गी तांत्रिक साधना में पतित हो गया था। उसमें भी मैं सफल नहीं हो सका। अभी एक समस्या में फँस गया हूँ। उसके लिए मुझे गुरुदेव से मिलने की अति आवश्यकता आन पड़ी है। क्या आप बता सकते हो, गुरुदेव इन दिनों कहाँ मिलेंगे ?"

" कैसी बातें करते हो भाई ? हमारे गुरुदेव तो सदा हमारे अंतःकरण में हमारे साथ-साथ विराजते हैं। तुम ध्यान करके सच्चे मन से गुरुदेव को याद करोगे वे , अवश्य ही तुम्हारी हर शंका का समाधान कर देंगे।"

" जी गुरुभाई ! मैं आपकी बात समझता हूँ, परंतु मैं एकबार गुरुदेव से मिलना चाहता हूँ।"

" ओह ! ऐसी बात है। तो वे अब इन दिनों तुम्हें पदयात्रा में नहीं मिलेंगे। चतुर्मास शुरू हो चुका है ।अब यह समय उनके एकांत ध्यान-साधना का समय है। वे तुम्हें अब नर्मदापुरम् में नर्मदा नदी के तटपर स्थित अपनी आश्रम में ही मिलेंगे।"

" अरे हाँ भाई जी ! आपने सही कहा, मुझे ही यह ध्यान नहीं रहा , कि आषाढ़ मास की शुक्ल पक्ष की देवशयनी एकादशी भी बीत गई है। अब तो वे कार्तिक मास की एकादशी तक अपने आश्रम में अपने ध्यान साधना में ही रहेंगे। धन्यवाद भाई साहब ! अब मुझे जल्द ही होशंगाबाद के लिए निकलना होगा। ठीक है भाई साहब, ओम् !"

" हरिओम् जी, हरि ओम् !" श्याम गिरी ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया।

कमाल गिरि वहाँ से सीधा भोपाल के लिए रवाना हो गया। शूरवीर साँगा की बेटी के पीछे पड़े हुए शैतान की शांति के लिए उसे अपने गुरुदेव के छोड़कर अन्य कोई भी सहारा नजर नहीं आ रहा था। कमाल गिरि भोपाल पहुँचकर नर्मदापुरम् के लिए निकला। अब वह नर्मदा घाटी कि जंगलों से गुजरता हुआ, अपने गुरुदेव की आश्रम की ओर बढ़ रहा था। जंगल में वन्य पशु और जहरीले कीड़ों का डर बना हुआ था, फिर भी कमाल गिरि अपने गुरुदेव को याद करके बढा जा रहा था। सुबह से चलते हुए शाम हो गई। अब वह आश्रम के पास पहुँचने वाला था।

मध्य प्रदेश की नर्मदापुरम् जिले की नर्मदा घाटी के किनारे वन क्षेत्र में स्थित गुरुदेव विनोदानंदश्री गिरि की आश्रम की शोभा अनुपम और अलौकिक थी। आश्रम के अंदर व्याघ्र-मृग, भल्लुक- शशक, मयूर-उल्लूक और अन्य पशु पक्षी एक साथ विचरण और निवास करते थे। आश्रम की शोभा अद्वितीय थी।

कमाल गिरी जैसे ही वनस्पति घेरे के अंदर से आश्रम के अंदर प्रवेश करना चाहा, तो उसे ऐसा लगा जैसे उसके शरीर में आग लग गई हो। वह तड़पकर उस घेरे से पीछे हटकर बैठ जाने को मजबूर हो गया। अब उसके शरीर में खड़े रहने की भी शक्ति नहीं थी ।

फिर उसने देखा आश्रम के अंदर से एक सिंह निकालकर उससे आँखें मिला उस पर गुर्राए जा रहा था। वह सोच में पड़ गया, आखिर ऐसा क्यों हो रहा है ? पहले जब भी वह आश्रम में आता था , तब तो ऐसा कुछ नहीं होता था। वह अपनी शरीर को शक्ति हीन महसूस कर रहा था।

वहाँ नीचे बैठते ही उसकी आँखें बंद हो गई और उसकी आंखों से अश्रु धारा बहने लगी। उसने मन-ही-मन अपने गुरुदेव का ध्यान कर ,उन्हें नमस्कार किया और प्रार्थना करने लगा।

" हे गुरुदेव ! मैं आपका अबोध शिष्य हूँ। मेरी गलतियों को आप क्षमा कीजिए। मैं जानता हूँ, मैं आपके बताए हुए मार्ग पर न चल सका हूँ। आपने मुझे अपना पुत्र मानकर अपना नाम तक दिया था। मुझे कमाल पाशा से कमाल गिरि बना दिया था। मैं ही अपने आत्मबल से कमजोर था , जो आपके बताए मार्ग पर चलने में सक्षम न हो सका। मुझे मार्ग दिखाइए, गुरुदेव ! मुझे अपनी शरण में ले लीजिए।

मैं खुद को बिल्कुल ही असहाय महसूस कर रहा हूँ। लोग मुझे आपका शिष्य समझकर मुझ पर विश्वास करते हैं। वे सभी यह समझते हैं ,मैं आपके बताए मार्ग पर ही चलता हूँ और लोगों के कल्याण के लिए कार्य करता हूँ। परंतु अब मेरी प्रतिष्ठा दाँव पर लगी हुई है ।

मैंने आपका नाम लेकर उसको रोक रखा है। अगर आपने मेरी सहायता नहीं किया , तो मैं उसे क्या कहूँगा ? मेरी सहायता करिए। मैं आश्रम में प्रवेश क्यों नहीं कर पा रहा हूँ। आपके आश्रम का सिंह न जाने क्यों मुझे अपनी आँखें दिखा रहा है। उसकी आँखें देख कर ऐसा लगता है जैसे वह

पल में ही मुझे खा जाएगा।' ऐसा प्रार्थना करता हुआ कमाल गिरि अपने गुरु से मिलने के लिए भाव विभोर हो रहा था।

कुछ देर बाद उसे अपने गुरुदेव विनोदानंदश्री गिरी जी की आवाज सुनाई दिया, "कमाल ! तुम्हारा प्रायश्चित अभी पूरा नहीं हुआ है। तुमने खुद को इतना पतित किया है, कि तुम अब आश्रम में प्रवेश करने के योग्य भी नहीं हो। मैंने कुछ नहीं किया है यह तो इस आश्रम की वनस्पतियों की आभा है, जो तुम्हें आश्रम के घेरे के अंदर प्रवेश करने से रोक रही है। तुमने हमारे बताए हुए ज्ञान मार्ग की साधना से खुद क च्युत कर वाममार्गी साधना में अपने को पतित कर लिया है। जिसके कारण तुम आश्रम में प्रवेश नहीं कर पा रहे हो।

तुम्हें अपनी मनोचेतना और आत्मिक शुद्धि के लिए आश्रम के बाहर ही नौ दिनों तक निराहार रहकर सवा लाख गुरुमंत्र जाप का अनुष्ठान करना पड़ेगा। इसके बाद ही तुम आश्रम में प्रवेश करने के योग्य हो पाओगे।

कमाल गिरी अपने अंत:चेतना में गुरुदेव की प्रेरणा पाकर निराहार रहकर सवा लाख गुरुमंत्र जाप का नौ दिवसीय अनुष्ठान करने लगा।'

वह नित्य ब्रह्म मुहूर्त में जागता , तत्पश्चात नर्मदा में स्नान करके, वट वृक्ष के नीचे बैठकर , दिन के दोपहर से पहले तक नित्य पाँच-छह घंटे श्रद्धा-भक्ति से मंत्र जाप करता था। चाहे सूरज की किरणों की चमक हो , या वर्षा की बूँदों की मार , वह अपनी गुरुमंत्र जाप में अडिग रहकर अपना अनुष्ठान पूरा कर रहा था। दोपहर होते-होते उसका गला सूखने लगता था। उसे निराहार रहकर ऐसी साधना बहुत कठिन प्रतीत हो रही थी। फिर भी वह अपनी प्रायश्चित के लिए वह अपने शरीर को तपाने में लगा हुआ था।

दो दिन बाद उसे गुरुदेव की प्रेरणा मिली, 'वत्स ! अगर तुम निराहार नहीं रह पाओ, तो एक दिन में एक बार कंदमूल ,फल या फिर जल ही ग्रहण कर लेना।' परंतु कमाल गिरि अपनी साधना में गुरुदेव द्वारा बताई गई पूर्व की बातों पर ही अडिग था। साधना या विश्राम के समय चेहरे पर गिरते हुए बारिश के बूंदों की ठंडक से ही वह अपनी प्यास को तृप्त कर लेता था। दिन-रात व्याघ्र- सिंह व अन्य जहरीले जीव-जंतुएँ उसके आसपास मंडराकर उसकी साधना और विश्राम में खलल डालने की अक्सर ही कोशिश करते रहते थे। परन्तु वह इन सबकी परवाह न करके निर्भय होकर अपनी साधना करता रहा। अंततः नौ दिन पूर्ण होने के बाद उसकी प्रायश्चित अनुष्ठान पूरा हुआ।

कमाल गिरि अपनी साधना पूरी होने पर खुश होकर उठ खड़ा हुआ और अपने गुरुदेव से मिलने की व्यग्रता में आश्रम के अंदर प्रवेश करने लगा।

PART -4

इस बार कमाल गिरी निर्विघ्नं आश्रम के अंदर अपने गुरुदेव की कुटिया की ओर बढ़े जा रहा था। न तो आश्रम के ब्याघ्रों ने उसके मार्ग में बाधा उत्पन्न किया नहीं उल्लूओं की कोई चीख ही उसे सुनाई दिया।

आश्रम के निकट पहुंचने पर उसने देखा गुरुदेव नीम के वृक्ष के नीचे ध्यानमग्न बैठे हुए अपनी साधना में लीन थे। कमाल गिरि वहां पहुंचकर गुरुदेव को दंडवत प्रणाम करके उनके सामने कुछ ही दूरी पर अपना आसन बिछाकर बैठ गया और गुरुदेव की ध्यान खत्म होने का इंतजार करने लगा।

कुछ ही देर बाद गुरुदेव ने अपनी बंद नेत्रों को अर्ध खुला किया और फिर गहरी सांस भरते हुए सामान्य नजरों से कमाल गिरि को देखने लगें। कमाल गिरि एक बार फिर गुरुदेव के चरणों में दंडवत लेट गया। गुरुदेव ने उसे अपने आशीर्वचनों के साथ उठकर बैठ जाने के लिए कहा।

" पुत्र कमाल ! उठ कर बैठ जाओ।"

" गुरुदेव ! एक समस्या आ गई है। मैं अपने आपको असहाय महसूस कर रहा हूं।"

" तुम सबको मेरी दी हुई शिक्षाओं को बताकर उन्हें मेरे बताए हुए मार्गों पर बढ़ते रहने की प्रेरणा दो। उनके जीवन की सारी समस्याएं स्वत: ही में खत्म हो जाएगी।"

" गुरुदेव हमारे एक शिष्य कि पुत्री प्रेत बाधा से पीड़ित है। मैं कुछ कर नहीं पा रहा हूं। उसके सामने स्वयं को विवश महसूस करता हूं।"

" स्वयं को सबल बनाना ही अपनी विवशता को दूर करने का एकमात्र उपाय है। सन्मार्ग पर चलते हुए, अपने आचरणों को उत्तम और मन को पवित्र रखते हुए शक्तियां अर्जित की जा सकती है। अब तुम भी अपनी साधना के पश्चात सबल हो चुके हो। अपनी गलतियों का एहसास होने और प्राश्चित से तुम्हारी शक्तियां तुम्हें वापस मिल चुकी है। तुम अब स्वयं को असहाय महसूस नहीं करोगे। परंतु इसकी पहली शर्त स्वयं में संस्कारों का सिंचन और सन्मार्गो का अनुकरण ही है।

जब तक कोई व्यक्ति अपने रहन-सहन, खानपान और मन को परिष्कृत नहीं करेगा, तब तक उसपर आसुरी शक्तियां हावी होकर उसे कमजोर और लाचार होने का एहसास कराती ही रहेंगी। तुम उसे और उसके पूरे परिवार को माता की साधना और शिक्षाओं से जोड़ दो, फिर सारी समस्या बहुत जल्दी खत्म हो जाएगी।"

" जी गुरुदेव! मैं समझ गया, समस्या की जड़ कहां है। अब मैं इसे दूर करने में अवश्य ही सफलता प्राप्त कर लूंगा।"

" हां वत्स ! सत्कर्मों की ढ़ाल ही सबको उसके बाधाओं से सतत रक्षा करेगी। तुम अब शीघ्र हो प्रस्थान करो । चतुर्मास की समाप्ति के बाद जब मैं वहां आऊंगा, तब मैं तुम्हारे उस भक्त से मिल लूंगा। तबतक तुम निसंकोच अपना कार्य प्रारंभ करो।"

" जी गुरुदेव ! " अपने गुरुदेव की बातें सुनकर कमाल गिरि उन्हें दंडवत नमस्कार करके और उनका आशीर्वाद लेकर वापस राजस्थान लौटा आया।

राजस्थान आने पर वह सबसे पहले शूरवीर सांगा से मिला । कमाल गिरि को देखकर बहुत सांगा बहुत खुश हुआ और उनके चरणों में नमस्कार करके उनकी ओर आशा भरी नजरों से देखने लगा।

" गुरुजी, गुरुदेव ने क्या कहा ? वे कब तक यहां पधार रहे हैं ?"

" उन्होंने मुझे तुम्हारी समस्या का सारा हल बता दिया है। वैसे वे चतुर्मास की समाप्ति बाद कभी भी तुमसे मिलने आएंगे।"

" गुरुदेव ने क्या कहा , आखिर मेरी बेटी की समस्या का क्या हल होगा ?"

" इसके लिए तुम्हें और तुम्हारे पूरे परिवार को माता की साधना करनी पड़ेगी। अपनी पुत्री से भी इसके नियमों को सख्ती से पालन करने के लिए कहना होगा। जितनी श्रद्धा-भक्ति के साथ तुम मां की साधना में समर्पित रहोगे ,उतनी शीघ्र ही तुम्हारी समस्या हल हो जाएगी।"

" गुरुजी ! मुझे इसके लिए क्या-क्या करना पड़ेगा ?"

" अपने पूरे घर की साफ-सफाई के साथ-साथ अपनी मन- मस्तिष्क की भी साफ-सफाई करनी पड़ेगी। घर का एक कोना भी नहीं बचना चाहिए। इसी तरह मन का एक कोना भी कलुषित नहीं होना चाहिए। "

" मैं इसका मतलब नहीं समझा गुरुजी ?"

" इसका मतलब यह है अपने घर के किसी कमरे या कोने में तुम जो कुछ नहीं अनुपयोगी या बेकार का समान संजोकर रख रखे हो, उसकी तुरंत साफ सफाई करो। घर के प्रत्येक कमरे की एक-एक कोने की नियमित साफ-सफाई होती रहनी चाहिए, जिससे कि नकारात्मक शक्तियां वहां अपना डेरा न जमा पाए। जो एकदम अनुपयोगी चीजें तुम अपने घर संजोकर रखे हुए हो, उसे हटा दो या किसी जरूरतमंद को दे दो।

मन-मस्तिष्क की साफ-सफाई से हमारा अभिप्राय तुम्हें अपने संस्कार और विचारों को परिष्कृत करने की आवश्यकता है। तुम्हें अपने पूरे परिवार के साथ तुम्हारी बेटी को भी अभक्ष्य पदार्थों के सेवन से पूरी तरह परहेज करना होगा। सात्विक भोजन करना होगा और किसी के प्रति रखे गए बैर-भाव को भूल जाना होगा। आज से किसी को सताने और परेशान करने की मनोभाव भूलकर हर पल यथायोग्य सबकी सहायता और मदद के लिए तैयार रहना होगा।"

" गुरुजी ! यह सब करने से क्या होगा ?"

" इससे ही सब कुछ संभव है। शक्तियां और आशीर्वाद संग्रहित करने का यही एकमात्र उपाय हैं। इसी से तुम्हें आसुरी शक्तियों से लड़ने की शक्तियां प्राप्त होगी। हमारे बूरे कार्य ही हमारे पापों का बोझ को बढ़ा देते हैं। सद्कार्य सदा ही पुण्य अर्जित करने में अपनी योगदान देते हैं। हमारे भोजन का प्रभाव हमारे मन-मस्तिष्क पर पड़ता है। उसके अनुरूप ही हमारे कार्य होते हैं। फिर हमें उन कार्यों का फल भुगतना पड़ता है। लोगों को सताने और परेशान करने से हमें उनकी हाय भी लेनी पड़ती है। यह हमारा शरीर और घर ईश्वर के मंदिर के समान है। निरीह जीवों को घर में मारकर खाने से हमारा घर और हमारा शरीर दोनों ही अपनी पवित्रता खोकर शमशान सा बन जाता है। उन जीवों की आत्माएं ही हमारी सुखचैन नष्ट कर देती है। स्वाद वश हम सोचते हैं उन्हें खाने से हमें अच्छा पोषण मिल रहा है। परंतु इसके फलस्वरूप उन जीवो की आह, कलह, मानसिक उद्वेगना, बीमारियां और तरह तरह की नकारात्मक शक्तियां सबल होकर हमारे मन मस्तिष्क को घेर लेती है, फिर हम अपनी बुद्धि का उचित उपयोग नहीं कर पाते हैं।"

" जी गुरुजी ! आप सही कह रहे हैं। मैं अब आप के बताए मार्ग पर ही चलूंगा। मैंने सब कुछ कर के देख लिया, परंतु अब आपके सिवाय मुझे और कोई सहारा नजर नहीं आता है। आपके बताए अनुसार मैं सबसे पहले अपने निवास स्थान और मन-मस्तिष्क की साफ-सफाई आज ही शुरू करूंगा।"

" हां,यह ठीक रहेगा। नाकारात्मक शक्तियों को परास्त करने के लिए इससे अच्छा कोई उपाय नहीं है। सद्विचारों की रोपन के लिए, प्रथम अपने निवास स्थान और मन-मस्तिष्क की सफाई करना फसलों के लिए खेत तैयार करने जैसा ही है।और गुरु कृपा वह बरसात है, जो बिना

खाद-पानी के ही फसलों को पोषण देती रहती है, गुरू में श्रद्धा होने से संस्कार सिंचन पल में संभव हो जाता है। इन्हीं संस्कारों से हमें दैवी संपदा प्राप्त होती है, और यही दैवी संपदा हमें सबल बनाती है।"

" गुरुदेव आपकी कृपा हमारे परिवार पर बनी रहे, मेरी यही कामना है।"

" मेरी कृपा तो सदा ही अपने शिष्यों और भक्तों के लिए ही होती हैं। यही हमारा गुरु कार्य और गुरु सेवा हैं।"

कमाल गिरी की बातें सुनकर शूरवीर सांगा की आत्मबल बढ़ चुका था, और वह अपने अंदर एक नई प्रकाश और ऊर्जा महसूस कर रहा था।

आपके प्रश्न-:

कौन है वह ड्रैकुला जो सुरवीर सांगा की बेटी मेघा के पीछे पड़ा हुआ हैं?

उसका मेघा से क्या संबंध है ?

क्या कमाल गिरि की ऐसी बातों से शूरवीर सांगा की बेटी की प्रेत(ड्रैकुला) बाधा दूर हो पाएगी ?

क्या दैवी शक्तियां आसुरी शक्तियों को परास्त करने में सफल हो पाएगी ?

इन सभी सवालों के उत्तर जानने के लिए पढ़ते रहें ' ड्रैकुला की ड्रीमगर्ल '

PART -5

शूरवीर सांगा ने कमाल गिरि को मान-सम्मान के साथ सेवा करने के बाद विदा किया। फिर वह खुश होकर अपनी पत्नी व बेटी को उनकी कहीं गई सारी बातें बताया। पत्नी तो मामले की गंभीरता को समझ कर उसकी बातों से सहमत हो गई, परंतु मेघा अपनी आधुनिक सोच और संस्कारों के कारण अपने पिता की बातों से सहमत नहीं हो रही थी।

" देखो बेटी ! गुरु जी ने जो कुछ भी कहा है, वह उन्होंने अपने गुरु के आदेशानुसार ही कहा है। उनकी बातों को मानने के अलावा और हमारे पास कोई मार्ग नहीं है।"

" तो क्या अभी से आप हमें भी अपनी तरह बाबा का भक्त बना देना चाहते हैं ? अभी मेरी उम्र ही क्या है ? कहते हैं- ' खेलने खाने की उम्र है! 'इस उम्र में ही इतना अनुशासन ! फिर भला मैं खुलकर कैसे जी सकूंगी ?"

" खुलकर जीना तो तब होगा न बेटी, जब तुम्हें वह शैतान जीने देगा। तुम्हें नहीं मालूम है, वह तुम्हें रोज रात को न जाने कहां लेकर चला जाता है ?"

" न जाने आप लोगों को कैसे भ्रम हो गया है ? मैं तो यही अपने कमरे में ही रहती हूं। मुझे तो कुछ भी आभास नहीं होता है ,कि कोई मुझे कहीं लेकर भी जाता है ?"

" अब तो हम सब ने इसको कई तरीकों से जांच लिया है । तुम्हारे कमरे का दरवाजा तोड़कर भी मैं आधी रात को देख चुका हूं। फिर भी तुम्हें हम सब की बातों पर विश्वास नहीं हो रही है ?"

" माना आप ठीक कहते हैं। फिर मैं पूजा कर पाठ करके आपके गुरु जी के बताए अनुसार घास-भूसा खाने लगूंगी, तो क्या इससे यह समस्या दूर हो जाएगी ?"

" हां बेटी ! गुरु जी ने कहा है ,ऐसा करने से यह समस्या अवश्य ही दूर हो जाएगी।"

" परंतु पापा मैं ऐसे कब तक जीऊंगी ? अगर ऐसा ही है, तो मैं इस घर को छोड़कर वापस जयपुर चली जाती हूं।"

" तुम्हारे जयपुर चले जाने से यह समस्या दूर नहीं होगी, बेटी!"

" तो क्या मुझे अब यूं ही घुट-घुटकर जीना पड़ेगा ?"

" इसे घुट-घुटकर जीना नहीं कहतें हैं बेटी ! यह सब तो हमारे संस्कार थे, जो हमने समय के साथ-साथ भुला दिया था। गुरु जी ने सत्य कहा है, अगर हम सत्कर्मों के साथ जीना शुरु कर दें, तो हमें दैवी संपदा के साथ-साथ ईश्वरीय शक्ति भी प्राप्त होनी शुरू हो जाएगी।"

" ब्रह्म मुहूर्त में जल्दी जागना, दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर प्रातः कालीन उगते हुए भगवान सूर्य को नमस्कार करना, योग-प्राणायाम करना, दैनिक उपासना करना फिर सात्विक आहार ही ग्रहण करना, यह सब करना तो किसी मिशन के कार्य से कम नहीं है।" मेघा परेशान होकर बोली।

" यह कोई कठिन कार्य नहीं है बेटी ! यह सब तो हमारी दिनचर्या का अंग है। बस कुछ ही दिनों में हम इसके अभ्यस्त हो जाएंगे। एक बार अपनी दिनचर्या में बदलाव करो, फिर तुम्हें यह सब अच्छा लगने लगेगा । ईश्वरीय संपदा और आशीर्वाद मिलने से तुम्हें असीम शांति मिलेगी।"

" ठीक है,अगर आप ऐसा कहते हैं कि ऐसी दिनचर्या और खानपान से ही हमारी समस्या दूर हो सकती है, तो मैं इसे जरूर अपनाऊंगी। आप सुबह मुझे समय से जगा दीजिएगा। मेरी नींद तो अलार्म से भी नहीं खुलती है। अगर आप मुझे नहीं जगाएंगे तो मेरी नींद भगवान सूर्य देव के जागने से पहले खुलने वाली नहीं है।"

" तुम चिंता मत करो, मैं तुम्हें कल सुबह समय से जगा दूंगा। बस अब तुम कहीं जाने पर भी अपनी सहेलियों के साथ या उसके घर कुछ उल्टा सीधा मत खा लेना । अन्यथा तुम्हारी साधना भंग हो जाएगी।"

" जी पापा ! आप अब मेरी चिंता छोड़ दीजिए । मैं अब बच्ची नहीं हूं ,आपने एक बार समझा दिया तो मैं अपना पूरा ध्यान रखूंगी। मैं कोई भी अभक्ष्य नहीं खाऊंगी, जिससे हमारी साधना भ्रष्ट हो।"

" ठीक है बेटी ! मुझे तुमसे ऐसी ही उम्मीद है। रात्रि में सोने से पूर्व भी सविता देव के गायत्री मंत्र पढ़कर सो जाना फिर अवश्य ही दैवी शक्तियां तुम्हारी सहायता करेगी और आसुरी शक्तियां तुम्हारे निकट फटकने से भी परहेज करेगी।"

"जी पापा ! मैं ऐसा ही करूंगी। आप एक कागज पर वेद की इस महामंत्र को लिखकर दे दीजिए, मैं अभी इसे याद कर लेती हूं।"

शूरवीर सांगा ने अपनी बेटी को कमाल गिरि द्वारा लिखकर दिए गए गायत्री मंत्र को मेघा की कॉपी में लिखकर दे दिया। मेघा उस महामंत्र को पढ़कर उसका अभ्यास करने लगी। 'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं

भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।'

मंत्र का भावार्थ:- उस प्राण स्वरूप ,दुख नाशक , सुख स्वरूप ,श्रेष्ठ ,तेजस्वी , अज्ञान नाशक ,देव स्वरूप , परमात्मा को मैं अपनी अंतरात्मा में धारण कर रहा हूं और वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित कर रहा है।

अब शूरवीर सांगा ,उनकी पत्नी अहिल्याबाई तथा उनकी बेटी मेघा तीनों ही उसी समय से अपने घर और अंतःकरण की परिष्कार में लग गएं। मेघा ने अपने अध्ययन कक्ष और शयन कक्ष की एक-एक कोना साफ कर लिया। छत से लेकर नीचे तक, प्रत्येक कोने और हर जगह की सफाई वह बड़े करीने से कर रही थी। कई पुस्तकें जो कई महीनों से धूल भरी हुई थी ,जिन्हें कभी पलटा नहीं गया था । मेघा ने उन सबकी अच्छी तरह से सफाई किया।

अहिल्याबाई ने भी अपने आंगन से लेकर रसोईघर और शयनकक्ष सबको अच्छी तरह से साफ करने के बाद कई बर्तन जो ऐसे ही पड़े हुए थे ,उनको साफ किया और अनावश्यक बर्तनों को एक डब्बे में रखकर उसे उपर के साफ रेक पर रख दिया। बाकी बचे स्टोर रूम और अन्य कमरों की कल सफाई करने का उसने मन-ही-मन संकल्प लिया।

शूरवीर सांगा भी अपने बैठक के कमरे और अन्य कमरों की सफाई का काम पूरा किया। साफ-सुथरे कमरे में भी आज वे धूल निकाल रहे थे । अपने बिस्तर की चादर को उतारकर उसे धोने के लिए रखकर वहां उन्होंने नए चादर बिछा दिया था। फिर स्नान से निवृत्त होने के बाद वे तीनों संध्याकालीन सूर्योपासना के बाद ध्यान संध्या कर रहे थे।

इसके पश्चात उन्हें अपने मन तथा निवास स्थान में एक अद्भुत ऊर्जा महसूस हो रही थी।

अहिल्याबाई मां अन्नपूर्णा का ध्यान करके अपनी रसोई घर में पूजा के पश्चात प्रसाद बनाने में लग गई। भोजन तैयार होने पर बलिवैश्व आहुति के बाद तीनों बैठकर प्रसाद ग्रहण करने लगें। आज उन्हें अपने भोजन में अमृत तुल्य स्वाद मिल रहा था। मेघा अपने कक्ष में शयन के लिए चली गई। सोने से पूर्व वह गायत्री माता के ध्यान के साथ गायत्री मंत्र का पाठ करने लगी। फिर माता का स्मरण करते हुए अपने बिस्तर पर लेट गई।

आधी रात को नींद खुलने पर अहिल्याबाई अपनी पुत्री मेघा को उसके कमरे में देखने आई। आज उसके कमरे का दरवाजा खुला हुआ था। अहिल्याबाई धीरे से दरवाजा खोल कर देखी तो मेघा चैन से अपने बिस्तर पर सो रही थी। यह देखकर अहिल्याबाई को खुशी हुई और वह गुरुदेव को

मन-ही-मन   प्रणाम करने लगी। अपने कमरे में आकर जब वह यह बात अपने पति को बतायी तो यह सब जानकर शूरवीर सांगा बहुत खुश हुआ और वह भी मन-ही-मन गुरूजी को धन्यवाद करने लगा।

PART -6

मेघा आज अपनी सहेली मीता के साथ अपने कपड़े खरीदने के लिए अलवर गई थी। जब वह अपनी खरीदारी के बाद दुकान से निकली, तो उसके सामने पुस्तक बेचने वाला एक लड़का आ गया। वह लड़का काफी सुंदर और नौजवान था। उस लड़के को देखकर मेघा ने उसे ऊपर से नीचे तक एक बार देखा और फिर उसकी नजरें उसके चेहरे पर जम गई। उस लड़के की आंखें भी उसे ही टकटकी लगाकर देख रही थी।

उसे देखने पर मेघा खुद को सम्मोहित होती महसूस कर रही थी। लड़के की आंखों में देखने पर उसे ऐसा महसूस हो रहा था ,जैसे पल में ही वह किसी अज्ञात नशे से वशीभूत होकर खोती जा रही है।

उसकी आंखें अपने आप बंद होती जा रही थी। आंखें बंद होते ही उसने खुद को एक बंजारन की वेशभूषा में देखा और वह लड़का उसके कंधे पर हाथ रखे हुए उसके साथ खड़ा मुस्कुरा रहा था। मेघा ने यह देखकर पल में ही अपनी आंखें खोल दी।

वह लड़का अब भी उसकी आंखों में ही देख रहा था। मेघा को चक्कर सा महसूस हुआ। उसे लगा अब वह खड़ी नहीं रह पाएगी, चक्कर खाकर गिर जाएगी। उसने अपने बाएं हाथ से मीता का सहारा ले लिया। मीता ने उसकी हालत कि स्थिति समझकर उसे पकड़ कर सहारा दिया और बगल में नीम की छाया में स्थित प्याऊ के चबूतरे पर उसे बैठाई।

पुस्तकें बेचने वाला वह खूबसूरत सा नौजवान भी अब उन दोनों के पास आ गया था। मेघा तो मीता का सहारा लेकर मदहोश जैसी चबूतरे पर बैठी हुई थी। मीता उस युवक को सवाल भरी नजरों से देखने लगी। पर वह लड़का अब भी शांत और गंभीर होकर मेघा को ही देखे जा रहा था।

" तुमने मेरी सहेली को क्या कर दिया ?" मीता के सब्र का बांध टूट गया।

" मैंने कुछ नहीं किया है। मैं तो यह सोचकर आप दोनों के पास आ गया, कि मैं आपकी कोई मदद कर पाऊं।"

" अभी-अभी तो यह बिल्कुल ठीक थी। तुमने इसे अपनी नजरों से देखकर न जाने कौन सा टोना कर दिया , कि इसकी ऐसी हालत हो गई है ?" मीता उसे प्रश्न भरी नजरों से देखती हुई बोली।

" नहीं-नहीं ! आपको गलतफहमी हुई है, मैंने ऐसा कुछ नहीं किया है ।आप लोग वातानुकूलित दुकान से निकलकर तेज धूप में बाहर आए हो ,संभव है इसके कारण ऐसा हुआ होगा। मैं तो अपनी पुस्तकें बेचना चाहता था। आप दोनों के सामने इसलिए खड़ा हुआ था, की आप दोनों मेरी कोई पुस्तकें खरीदेंगी।" वह युवक अपनी किताबों को दिखाता हुआ बोला।

" ठीक है, मुझे तुम्हारी कोई किताबें नहीं चाहिए ,अब तुम जाओ।"

" मेम साहब ! मैं एक गरीब बंजारा हूं । मेरी एक पुस्तक खरीद कर आप मेरी सहायता कर सकती हैं, यह देखिए न अच्छी-अच्छी पुस्तकें हैं।" युवक अपनी पुस्तकें मीता के हाथ में देने लगा।

" मैंने कहा न, मुझे कुछ नहीं चाहिए। फिर भी तुम क्यों परेशान कर रहे हो ? एक तो तुमने न जाने मेरी सहेली को क्या कर दिया ? इसे चक्कर आ रहा है और तुम अपनी पुस्तकें बेचने के चक्कर में लगे हो ?" मीता गुस्से भरे लहजे में कह रही थी।

" मेम साहब ! देखिए , आपकी सहेली अब ठीक हो गई हैं। मैंने कहा न, मैंने कुछ नहीं किया है। मैं भला क्या करूंगा ? मैं कोई टोने-टोटके करने वाला बंजारा नहीं हूं।" उस युवक की बात सुनकर मीता अपनी सहेली मेघा को देखने लगी। मेघा अब उन दोनों की बातें ध्यान सुन रही थी।

" तुम्हें क्या हो गया था, मैं तो घबरा ही गई थी ? यह चक्कर तुम्हें कब से आने लगा है ?" पर मेघा ने नीता के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। वह अब भी उस पुस्तक बेचने वाले युवक को ध्यान से देख रही थी।

" मेम साहब ! आप तो मेरी कुछ पुस्तकें खरीद लीजिए। " उस युवक ने इस बार मेघा के हाथों में अपने कई पुस्तकें थमा दिया।

मेघा उसके पुस्तकों को अपने हाथों में थाम चुकी थी। वह सुस्त और सम्मोहित सी बैठी हुई उन पुस्तकों को एक-एककर देखने लगी।

बेताल पच्चीसी, बंजारन का पुनर्जन्म, बंजारा और राजकुमारी का प्रेम, बंजारन और राजकुमार, राजकुमार सूर्या और बाली बंजारन की कथा आदि कई पुस्तकें थी। मेघा उन सारी पुस्तकों को देखने के बाद भी जड़वत ही बैठी हुई थी।

"मेम साहब ! आपको कौन सी पुस्तक चाहिए ?" उस युवक की आवाज सुनकर मेधा मीता की ओर देखने लगी।

" अगर तुम्हें कोई पसंद है तो ले लो ।" मीता ने कहा।

मेघा ने सारी पुस्तकों को उस युवक की ओर बढ़ा दिया। उस युवक ने उन सभी पुस्तकों को अपने हाथ में लेकर उनमें से एक पुस्तक ' राजकुमार सूर्या और बाली बंजारन की कथा' वाली पुस्तक को मेघा के हाथों में वापस थमा दिया।

" इसे रख लिजिए मेम साहब ! यह आपको बहुत पसंद आएगी।"

" क्यो, तुम्हें इसके पैसे नहीं चाहिए क्या ?" मीता उस बंजारे की आंखों में देखती हुई बोली।

" पैसे तो चाहिए न मेम साहब ! इस बंजारे को तो आपको ₹10 अधिक ही देना चाहिए।" वह युवक विनम्रता से बोला।

" क्यों , हम क्या कोई धन्ना सेठ हैं, जो तुम्हें ₹10 अधिक दे दें ?"

" हां आप दोनों बड़े घर की बेटियां हैं। मैं आपकी सहेली को जानता हूं। यह सांगाखेड़ा के जमींदार शूरवीर सांगा की बेटी हैं। इनके लिए ₹10 का क्या मूल्य है ?"

ओह ! तो तुम मेरी सहेली के पिताजी को जानते हो ?"

" हां, मैं कई बार अपने बाबा के साथ इनके गांव में हींग और नमक बेचने के लिए जा चुका हूं। मेरे बाबा इनके पिता जी को जानते हैं। उन्होंने ही मुझे इनके पिताजी के बारे में बताया था और उनका घर दिखाया था। फिर मैंने वहां इन्हें देखा था, तो समझ गया यह शूरवीर सांगा जी की ही बेटी हैं।"

"पर वैसे तो यह पुस्तक मेरी सहेली को चाहिए नहीं । जब इसने तुम्हें सभी पुस्तकें वापस कर दिया , तो फिर से एक पुस्तक इसके हाथों में थमाने का क्या मतलब है ? इसे कोई पुस्तक नहीं चाहिए।" ऐसा कहने के बाद मीता मेघा के हाथ से उस पुस्तक को लेकर युवक को वापस करना चाही। परंतु मेघा के हाथ की मजबूत पकड़ ने उस पुस्तक को उससे लेने नहीं दिया।

" अगर तुम्हें यह पुस्तक चाहिए तो इसको पैसे दे दो और इसे चलता करो।" मीता मेघा की ओर देखकर बोली।

मेघा ने चुपचाप एक सौ रुपए का नोट निकालकर उस युवक को दे दिया।

वह युवक जब बाकी पैसे वापस करने लगा तो मेघा बोली, " बाकी अपने पास रख लो।"

" नहीं मेम साहब ! मैं तो यूं ही कह रहा था , मुझे अधिक पैसे नहीं चाहिए। आप इसे ले लीजिए।" वह युवक मेघा को बाकी पैसा वापस करना चाह रहा था , मगर मेघा उसे नहीं ले रही थी।

मेरी तरफ से बक्शीश समझ कर रख लो । वैसे क्या तुम मेरा नाम भी जानते हो ?"

" जी हां, मेम साहब ! आप मेघा जी हैं न ?"

" अरे वाह ! तुम तो मेरे बारे में बहुत कुछ जानते हो ,पर मैं आजतक तुम्हें नहीं जानती थी । तुम्हारा शुभ नाम क्या है ?" मेघा उस युवक के आंखों में देखते हुए पूछी।

" मेरा नाम रंजीत है।" वह युवक मेघा की आंखों में देखते हुए बोला।

" बहुत सुंदर और प्यारा नाम है आपका ! मुझे आपसे मिलकर खुशी हुई।" मेघा मुस्कराते हुए बोली।

दोनों को यूं एक-दूसरे में रूचि लेते हुए और इस तरह बातें करते हुए देखकर मीता अबतक खींझ चुकी थी।

" चलो, अब देर हो रही है। तुम तो ऐसा हालचाल पूछने लगी, जैसे कोई रिश्तेदार मिल गया हो।" मीता रंजीत को देखती हुई नाक सिकोड़कर बोली और मेघा हाथ पकड़कर खींचते हुए ले जाने की कोशिश करने लगी। अब मेघा मीता के साथ बढ़ी चली जा रही थी, परंतु वह अब भी मुड़कर रंजीत को देख रही थी। रंजीत भी उसे जाता हुआ देख रहा था।

मीता बड़बड़ाती हुई जा रही थी, " ₹20 की किताब का ₹100 दे दी, और अब रिश्तेदारी बढ़ाने में भी लग रही है। ऐसे बंजारों को मुंह नहीं लगातें है, सिर पर चढ़ जाएगा।"

पर मेघा मन-ही-मन सोच रही थी , ' कहीं यही मेरे जीवन का हीरो तो नहीं ?'

PART -7

मेघा अब अपने कपड़े और वह पुस्तक लेकर अपने घर आ गई थी। अब भी उसकी आंखों के सामने रंजीत का चेहरा घूम रहा था। खुली आंखों से भी वह उसे हरपल महसूस कर रही थी। आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ था। वह अपने कॉलेज में कई लड़कों से करीब से मिली थी और उसने उनकी आंखों में झांकने की कोशिश भी की थी। परंतु किसी के प्रति ऐसी आकर्षण उसे आजतक महसूस नहीं हुई थी। मेघा को अब वह पुस्तक जल्दी से पढ़ने की ललक हो रही थी।

कुछ ही देर बाद उसने उस पुस्तक को अपने कमरे में बैठकर पढ़ना शुरू किया। वह जो कुछ भी पढ़ती सारी घटनाओं का चित्र उसके मन में सजीव हो उठता था। वह खुद को उस कहानी से जुड़ी हुई महसूस कर रही थी।

उसने कहानी को पढ़ना शुरू किया। शीतल गढ़ के राजा भानु प्रताप देव थे। यह सब पढ़ते ही मेघा के आंखों के सामने भानु प्रताप देव का किला और उनका चेहरा तथा उनके परिवार के सभी सदस्यों का चेहरा उनकी आकृतियां उसकी आंखों के सामने बनने लगी थी। भानूप्रताप देव की तीन संताने हुई ,दो पुत्र एवं एक पुत्री। पुत्रों के नाम सूर्य प्रताप देव और चंद्र प्रताप देव था। पुत्री का नाम मीनाक्षी रखा गया। सूर्य प्रताप सबसे बड़ा था और मीनाक्षी सबसे छोटी थी।

सूर्य प्रताप देव जब बड़ा हुआ तो महाराज भानूप्रताप देव का ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते अपनी प्रजा में सबका चहेता बन गया था। उन दिनों राजा का बड़ा बेटा ही अपने पिता की विरासत का वारिस होता था। प्यार से लोग सूर्य प्रताप देव को सूर्या भी कहा करते थे।

सूर्या भी राजकुमार होने के नाते अपनी प्रजा के सुख-दुख में शामिल होने में रुचि लेता था। प्रजा के लोग उसका बहुत प्रेम और सम्मान करते थे। शहर के बाहर बंजारों की एक टोली हर वर्ष अपने बनाए हुए औजारों और अन्य वस्तुओं को बेचने के लिए आती रहती थी। उन्हीं बंजारों की टोली में राम सिंह नाम का एक बंजारा भी था। रामसिंह बंजारे की दो बेटियां और एक बेटा था। बेटियों में सबसे बड़ी बाली थी। बाली भी उन दिनों सत्रह वर्ष की हो चुकी थी।

सूर्या जब भी बंजारों की टोली में बंजारों की हालचाल लेने आता, बाली उसे हसरत भरी नजरों से देखती थी। एक दिन सूर्या की उस पर नजर पड़ी। दोनों की आंखें मिलीं तो वे दोनों कुछ पल के लिए एक-दूसरे में ही खो गए। इस तरह पहली नजर में ही उनकी आंखें चार हो गई। उस दिन

सूर्या अपने महल वापस आया , तो उसके आंखों के सामने बाली का ही चेहरा घूम रहा था।

उसने बाली की स्मृति को कई बार अपने दिलो-दिमाग से झटकने की कोशिश किया, परंतु सफल न हो सका। बरबस दूसरे दिन भी वह उससे मिलने बंजारों की टोली पहुंच गया। परन्तु उस दिन उसके पिता के अड्डे पर बाली से उसकी भेंट नहीं हुई। शायद आज वह गांव में अपने पिता द्वारा बनाए हुए औजारों को बेचने चली गई थी।

वह उदास होकर वापस महल वापस आ गया। आज किसी काम में उसका मन नहीं लग रहा था। वह बाली की एक झलक पाने के लिए बेचैन हो रहा था। दूसरे दिन भी वह उससे मिलने जाने से खुद को रोक न सका। दूसरे दिन जब वह राम सिंह के अड्डे पर पहुंचा, तो बाली वहीं अपने पिता के कामों में मदद कर रही थी। राम सिंह ने उसका आवभगत किया और आदर सहित बैठने को कहा।

राम सिंह के कार्यस्थल पर बैठकर सूर्या बाप-बेटी दोनों को उनका कार्य करते हुए बड़े ध्यान से देख रहा था। सूर्या ने खुद के प्यासे होने की बात कही, तो राम सिंह ने अपनी बेटी बाली को उसके लिए जल लाने को कहा । बाली के हाथों तांबे के पात्र में जल पीकर सूर्या बहुत प्रसन्न हुआ। बाली भी अपना कार्य करते हुए बीच-बीच में अपनी तिरछी नजरों से उसे देख लेती थी।

इसी तरह सूर्या को अब उसे देखे बिना चैन नहीं पड़ता था। बाली भी उसे देखने के लिए उतनी ही बेकरार रहती थी। जिस दिन सूर्या दोपहर तक बंजारों की टोली के पास नहीं आता था , उस दिन दोपहर के बाद बाली अपने पिता द्वारा बनाए हुए औजारों को लेकर शीतल गढ़ के लिए निकल जाती थी। वह अपने औजारों के साथ भानु प्रताप के किले से होकर गुजरना नहीं भूलती थी।

सूर्या भी उसकी आने की इंतजार और ताक में ही रहता था। बाली के किले के पास पहुंचते ही, वह अपने प्राचीर से देखकर उसे अपने प्रहरी को भेजकर बुलाता और उससे मोलभाव करने के बाद उसके सारे औजार खरीद लेता था। यह सिलसिला महीनों तक चलता रहा।

वे दोनों अब शीतल गढ़ के किले से दूर स्थित पहाड़ी की तराइयों में छूप-छूपकर मिलने लगे थे। बाली बावड़ी से जल लेने के बहाने जाती थी। वहीं सूर्या अपने घोड़े पर सवार होकर बंदूक लेकर नगर की गस्ती करने के बहाने निकल जाता था। दोनों को एक-दूसरे की प्रेम पर अटूट विश्वास था।

कभी बाली अपनी बकरियों को लेकर चराने के बहाने पहाड़ी के मंदिर के पास आ जाती थी । तब सूर्या भी उससे मिलने की ललक से खुद को रोक नहीं पता था। दोनों एकांत में मिलते तो घंटों तक प्यार भरी बातें करतें थें ।

एक दिन बाली ने सूर्या से कहा, " सूर्या ! तुम तो राजकुमार हो और मैं एक बंजारे की बेटी। हमारा कभी कोई मेल नहीं हो सकता है। हमें अपने रास्ते अलग कर लेनी चाहिए। अगर हमने ऐसा नहीं किया तो इस प्रेम में आगे बढ़ जाने पर हमारे लिए अलग होना मुश्किल हो जाएगा। तुम मान लेना हमारा संबंध इतने दिनों तक का ही था। हम इस जीवन के सफर में और आगे साथ-साथ नहीं चल सकेंगे।"

" बाली ! तुम भी क्या बच्चों जैसी बातें करती हो ? मैंने क्या रेत का घरौंदा बनाया है, जो सुबह बनाकर शाम को मिटा दूं ? मैंने तुमसे प्रेम किया है कोई खेल नहीं। तुम्हारे बिना तो मैं जीने की कल्पना भी नहीं कर सकता हूं।"

" राजा, ऐसे जिद नहीं करते हैं। मैं कहां भागी जा रही हूं ? मैं तो आजीवन तुम्हारे नाम पर कवांरी बैठी रह जाऊं। मगर तुम्हारे लिए मुझे अपनाना राजा साहब से बगावत करने जैसी बात होगी। मैं जानती हूं , राजा साहब इसके लिए कभी तैयार नहीं होंगे।"

" थम उसकी चिंता को न कर छोरी ! मैं थारे वास्ते अपने पिता क्या, सारे जमाने नू बगावत कर दूं।" सूर्या के बात पर मन-ही-मन डरती हुई बाली प्रकट में कुछ न कह सकी।

इसी तरह दोनों का प्यार परवान चढ़ने लगा। बाली के पिता रामसिंह को भी दोनों के प्रेम की भनक मिली। किसी ने दोनों को साथ साथ देखा था। उस व्यक्ति की बात सुनकर राम सिंह को उसकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। वह उन दोनों को एक-दूसरे के साथ रंगे हाथों पकड़ने की फिराक में लग गया।

PART -8

मेघा जब से इस पुस्तक को पढ़ रही थी, वह खुद को 'बाली' की जगह महसूस कर रही थी। बाली के बारे में जब भी कोई घटना वह पढ़ती , तो उसे लगता, यह सब कुछ उसके साथ ही घटित हो रहा है। कहानी पढ़ते समय अपने मस्तिष्क में ऐसे चित्र बनने से वह परेशान हो गई थी।

कहानी में सूर्या का नाम आते ही उसके सामने उस रंजीत का रंजीत का चेहरा घूमने लगता था, जिससे आज मेघा ने यह पुस्तक खरीदी थी।

कहानी पढ़ते समय अपने मस्तिष्क में बाली और सूर्या का स्वयं और रंजीत के रूप में चित्रित पाकर उसे बहुत खीझ हो रही थी। उसने ऐसी बातों से चिढ़कर उस पुस्तक को पढ़ना बंद कर दिया। फिर भी उसके मन-मस्तिष्क में अबतक की सारी बातें चलचित्र की भांति घूम रही थी। जितना वह इस बात को भुलाने की कोशिश करती, उसे इस बात का चित्रण उसके मन में होने लगता था। थक-हारकर वह अपने मन को यूं ही कहनी में बहती हुई छोड़ दी।

वह जब अपने कमरे से बाहर आई, तब भी उसका मन उसी कहानी के बातों में ही उलझा हुआ था। वह ताजी हवा खाकर अपना मन ठीक करने के लिए आंगन से निकलती हुई, छत पर जाने की कोशिश करने लगी।

तभी उसकी मां अहिल्याबाई उसे पुकारी, " लाली ! कहां जा रही हो बेटा ? ....

मैं तुम्हारे लिए तुम्हारी पसंद का चूरमा बनाई हूं।"

परंतु मेघा को उसकी मां का 'लाली' पुकारना उसे 'बाली' सा लगा। उसे ऐसा महसूस हुआ, जैसे उसकी मां उसे 'बाली' संबोधित कर पुकार रही हो। शायद उसका मन अब भी पूरी तरह 'बाली' में ही खोया हुआ था।

" मां, मैं बाली नहीं हूं। आप भी मुझे बाली क्यों कह रहीं हैं ?" मेघा अपनी मां की ओर मुड़कर रूखी आवाज में बोली। उसकी मां को यह समझते देर नहीं लगी, की मेघा का ध्यान कहीं और है या वह मानसिक रूप से परेशान है।

उसकी मां उसे प्यार से समझाते हुए बोली , " अरे बेटी ! तुम्हारा ध्यान कहां है ? मैं तुम्हें 'बाली' नहीं 'लाली' कह रही हूं ! तुम्हें क्या हो गया है ? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न?"

मां की मीठी वाणी सुनकर मेघा की व्यथित हुई चेतना लौट आई, " मां ! मैं थोड़ी परेशान थी। न जाने कैसे मुझे लगा, आप मुझे 'बाली' कहकर पुकार रही हैं !"

"ओह ! पर यह बाली, आखिर है कौन बेटी ? जो तुम उसका नाम सुनकर इतनी परेशान हो रही हो ?"

" मां, वह वैसे तो कोई नहीं। पर हां, मैं अभी एक कहानी की पुस्तक पढ़ रही हूं , उस कहानी की बंजारन है वह !"

" अच्छा तुम मुझे भी वह पुस्तक पढ़ने के लिए देना, मैं भी उस बंजारन की कहानी पढूंगी।"

" नहीं मां, आप उसे कभी मत पढ़ना। मैं तो उसे पढ़कर परेशान हो गई। उस कहानी को पढ़ने पर मुझे ऐसा महसूस होता है ,जैसे वह बंजारन में ही हूं।"

" क्या ? आखिर तुम्हें ऐसा क्यों महसूस हो रहा है ? तब तो मैं भी उस कहानी को पढ़कर अवश्य देखूंगी। तुम मुझे वह पुस्तक अभी ला कर दो।"

" अभी नहीं मां, अभी तो मैंने ही उस पुस्तक की कहानी को खत्म नहीं किया है। मैं पूरा पढ़कर उसे आपको देती हूं।"

"अच्छा ठीक है! अब कुछ खा-पी भी लो। तुम तो दिन रात पुस्तकों में ही लगी रहती हो। खाने-पीने की भी फुर्सत नहीं निकालती हो।"

" नहीं मां ,मुझे अभी भूख नहीं है।आप कहती हैं, तो मैं पानी पी लेती हूं।" मेघा बरामदे में रखी हुई मटके से दो घूंट पानी पीकर छत पर भाग गयी।

अहिल्याबाई उसे देखती ही रह गई। फिर मेघा के बारे में ही सोचने लगीं। ' अब मेघा बड़ी हो गई है। इसने अब अपनी पढ़ाई भी पूरी कर ली। अब हमें जल्द-से-जल्द इसके लिए एक अच्छा सा वर तलाश कर इसका विवाह कर देना चाहिए। यह तो ऐसे ही और आगे पढ़ने की जिद करती रहेगी। पर बेटी को जीवन भर अपने घर में थोड़ी न बिठाकर रखना है ?'

तभी कूकर की सिटी से अहिल्याबाई की ध्यान भंग हुई। वह रसोई शेड की ओर बढ़ गई।

शाम का समय था ,ठंडी-ठंडी हवाएं बह रही थी। बाहर की ठंडी हवाओं का एहसास पाकर मेघा एक पल के लिए सब कुछ भूल गई। उसके घर से थोड़ी दूर एक बड़े मकान के खंडहर में कीकर के वृक्ष की नीची हो रही डाल पर, बैठी दो मोरनियां बहुत ही कर्णभेदी आवाज में पियाऊं-पियाऊं कर रहीं थीं, जो उसके छत पर पहुंचने के कुछ ही पल में उड़ कर दूसरी और चली गई। मेघा छत के किनारे खड़ी होकर आसमान में उड़ते हुए तोते को झुंड को बड़े ध्यान से देख रही थी, तभी उसकी नजर आसमान में थोड़ी और आगे बढ़ गई। आसमान के कपासी बादल सुनहरे रंग में बदलने ही वाले थे । तभी उसे बादलों के झुरमुट में रंजीत का चेहरा दिखाई देने लगा। मेघा उसे मंत्रमुग्ध सी देख रही थी। तभी उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे वह मेघा को पुकार रहा। मेघा के कानों में बाली-बाली की ध्वनि गूंज रही थी। मेघा को यह मालूम नहीं हुआ, कि उसकी आंखों के सामने यह सब सत्य घटित हो रहा है, या यह सब उसकी दृष्टि भ्रम है । मेघा अपनी आंखों को दो-तीन बार मलकर और फिर खोल-खोलकर देख रही थी। फिर भी आसमान में रंजीत का चेहरा उसकी आंखों से ओझल नहीं हो रहा था। परेशान सी होकर वह नीचे आ गई। उसकी मां रसोई शेड में तख्ते पर बैठी हुई ,पकते हुए भोजन की निगरानी कर रही थी। वह जाकर अपने मां के पास बैठ गई और झट से अपना सिर अपनी मां के गोद में रखकर अपनी आंखों को बंद कर ली। अहिल्याबाई मेघा को इस तरह अपनी गोद में लेटे हुए देखकर डर सी गई।

वह उसके माथे पर प्यार से हाथ फेरते हुए बोली, " मेघा ! क्या हो गया तुम्हें बेटी ? मैं जानती हूं तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है। मना करने के बाद भी तुम दिन भर अलवर की दौड़ लगाती रहती हो। मैं सुबह ही बोली थी , ' मैं फेरीवाले बजाज से तुम्हारे लिए घर पर ही कपड़े मंगवा दूंगी, पर तुम कहां मेरी सुनने वाली हो ? थक गई न, आ-जा कर ?" परंतु मेघा चुपचाप अपनी आंखें बंद करके अपनी बंद आंखों से रंजीत की बनती हुई तस्वीर को देख रही थी। अब मां की गोद में उसका सिर होने के कारण उसे डर नहीं लग रहा था।

PART -9

मेघा अपनी मां के गोद में लेटी हुई नींद में सो गई। अहिल्याबाई ने जब देखा कि मेघा गहरी नींद में सो गई है, तब उसने उसे जगाना उचित नहीं समझा। वह अपनी चादर को उसके सिर के नीचे रखकर अपना पैर खींच लिया और उसे सोने दिया।

कुछ देर बाद मेघा की नींद अपने आप खुल गई। जागने पर वह देखी कि शाम ढलने पर अंधेरा हो चुका था ।

उसके जागते ही अहिल्याबाई बोली, " बिटिया हाथ-मुंह धोकर खाना खा लो, सबने खा लिया। मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रही थी।"

मेघा हाथ-मुंह धोकर आई ,तब दोनों मां-बेटी संध्या भोजन करने लगीं। मेघा भोजन करते हुए भी कभी-कभी अपनी यादों में खो जाती थी।

उसकी मां ने उसे दो बार टोक दिया, " बिटिया ! भोजन करते हुए कहां खो जाती हो ?"

" मां मैं उस किताब की कहानी में ही खो जाती हूं। अब भी बाली की बातें मेरे मस्तिष्क में घूम रही है।"

" तुम्हें ऐसी फालतू किताबें नहीं पढ़नी चाहिए, जिससे तुम्हारा मन व्यथित हो। अब रात में वह पुस्तक मत पढ़ना। कल सुबह मुझे दिखाना ,फिर मैं बताऊंगी उसे क्या करना है।"

" हां मां, अब रात्रि में मैं उसे नहीं पढ़ूंगी।"

मेघा भोजन के पश्चात जब अपने कमरे में सोने गई, तब उसकी नजर एक बार फिर उस पुस्तक पर पड़ गई। वह चाहकर भी खुद को उसे दूबारा पढ़ने से रोक नहीं सकी।

एक बार फिर पुस्तक मेघा की हाथों में था। मेघा पुस्तक पढ़ते हुए न जाने कब नींद में चली गई थी।

'बाली और सूर्या एक बार फिर बैठकर बातें कर रहे थे। बाली ने कहा, " सूर्या ! शायद मेरे बाबा को हमारे प्यार की भनक मिल गई है। मेरी मां मुझसे कई सवाल कर रही थी। बाबा ने मां को मुझे समझाने के लिए कहा होगा। अब हम क्या करेंगे ?"

" बाली ! यही तो हमारे प्यार की इंतहा है। हमें ऐसी कई बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, तुम कभी भी घबराना मत। कहते हैं 'प्यार इंतिहान लेता है।' मुझे भरोसा है हम कभी भी इसमें असफल नहीं होंगे।"

" लेकिन तुम मेरे बाबा को और राजा साहब को कैसे मनाओगे ? अगर उन्होंने हमारे प्यार को नहीं समझा और हमारी बात नहीं मानें तो ?"

" मैं अपने पिताजी से विद्रोह कर दूंगा लेकिन तुम्हें कभी नहीं भूल सकता हूं।"

" और मेरे बाबा को कैसे समझाओगे ?"

" उन्हें तो मैं मना लूंगा। अगर मैं अपने पिताजी को समझाने में सफल हो गया, फिर तुम्हारे बाबा को भी अपनी बात मानने के लिए विनती करूंगा।"

" काश ऐसा ही हो, पर मुझे तो बहुत डर लग रहा है। अब देखो, हमारे बीच का फासला कितना बड़ा है।"

" हमारे बीच कोई फासला नहीं है बाली ।हम दोनों अब दो जिस्म और एक जान है। यह देखो, हम कितने करीब हैं। " सूर्या ने बाली को अपनी बाहों में भर लिया। दोनों कुछ पल के लिए एक दूसरे में खो गएं। बाली ने भी अपनी बाहों से सूर्या को कसकर पकड़ ली थी । शायद दोनों खुद को एक-दूसरे में इस कदर खो जाना चाहते थे ,जिससे कोई उनको अलग करने की बात भी न सोच सके।

परंतु उन्हें नहीं पता था कि इन्हीं क्षणों को दो आंखें हसरत भरी नजरों से खुद में आंसू और अंगार दोनों ही लिए देख रहें थें। वह दो आंखें बाली के पिता राम सिंह की थी।

अगले ही पल राम सिंह की कड़कती आवाज दोनों के कानों में पड़ी।

" रुक जाओ !"

दोनों अपनी आंखें खोलकर आवाज की दिशा में देखने लगें थे। अगले पल जैसे ही उनकी नजरें

राम सिंह से मिली, वह दोनों उठकर खड़े हो गएं। बाली का कलेजा अपने बाबा के डर से कांप रहा था। वही सूर्या चट्टान की तरह बाली की ढाल बनकर उसके आगे खड़ा था।

" बाली का रास्ता छोड़ दीजिए,राजकुमार!"

" बाबा ! मैं भी आपके पुत्र के समान ही हूं। मैं बाली से दुनिया की हर वस्तु से अधिक प्रेम करता हूं।"

" लेकिन मेरी बेटी बाली कोई वस्तु नहीं है राजकुमार। आप इसे भूल जाइए।"

" मैं खुद को कभी भूल सकता हूं लेकिन बाली को कभी नहीं। मैं बाली से विवाह करना चाहता हूं।"

" क्या आपने इस बात की चर्चा कभी राजा साहब से किया है, नहीं न ? ऐसा कभी नहीं होता है, राजकुमार ! ऐसे सपने मत देखिए, जो कभी पूरे न होंगे।"

" बाबा ! बस मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए फिर यह सपना पूरा हो सकता है।"

" परंतु मेरे कबीले से राजघराने में बेटियों को देने की परंपरा नहीं है। क्योंकि अगर आप मेरी बेटी को अपनी पत्नी का दर्जा नहीं दे पाएंगे, फिर आपको अपने ही राज्य के बंजारों से युद्ध करनी पड़ेगी।"

" मैं आपकी बेटी को अपनी पत्नी बनाऊंगा और उसे सर्वश्रेष्ठ रानी का दर्जा दूंगा।"

" परंतु मैं अपने कबीले का सरदार हूं और मेरी बेटी पर पहला हक हमारे कबीले के सबसे बहादुर और पराक्रमी युवक का ही होता है। अगर आप मेरी बेटी को अपनी रानी बनाना चाहेंगे, तो इसके लिए आपको हमारे कबीले की प्रतिस्पर्धा में शामिल होकर विजयी होना पड़ेगा। वह भी आपके पिता की आज्ञा के बाद ही, मैं आपको अपनी बेटी दूंगा ,अन्यथा कभी नहीं। मर जाऊंगा लेकिन जीते जी आप मेरी बेटी को छू भी न सकेंगे।"

" मुझे आपकी सारी शर्तें मंजूर है। मैं आपके कबीले की प्रतिस्पर्धा में प्रतिभागी बनूंगा। जो भी मुकाबला मिलेगा उसे जीतकर मैं बाली को शीतल गढ़ की राज बहू बनाऊंगा।"

" ठीक है, परंतु आज के बाद आप मेरी बेटी से मिलने की कभी कोशिश नहीं करेंगे। यह बात मैं आप दोनों के हित के लिए ही कह रहा हूं। अगर आपको हमारी शर्त मंजूर हो तो महाराज की

आज्ञा लेकर उनके साथ कबीले की प्रतिस्पर्धा में भाग लेने के लिए आएंगे। प्रतिस्पर्धा के आयोजन की सूचना आपके राजमहल में भेज दिया जाएगा।"

" ठीक है बाबा ! मुझे आपकी सारी शर्तें मंजूर है। मेरी बाली अभी आपके पास अमानत है। मैं आपकी कबीले की प्रतिस्पर्धा में विजयी होकर इसे जरूर हासिल करूंगा। बाली को पाने के लिए मैं कबीले की प्रतिस्पर्धा में क्या, अगर इंद्र भी मेरे प्रतिद्वंदी हों, तो मैं उनसे भी टकरा जाऊंगा।"

बाली अपने बाबा के साथ अपने कबीला वापस लौट गई। सूर्या भी अपने राजमहल लौट आया। उसने इस बात की चर्चा अपने पिता महाराज भानु प्रताप देव से किया। वह राम सिंह द्वारा कही गई सारी बातों को बताया।

" पिताजी ! मैं राम सिंह कबीले के सरदार राम सिंह की बेटी बाली से प्रेम करता हूं। जब उन्हें हमारे प्रेम की बात मालूम हुई ,तब उन्होंने अपनी पुत्री के विवाह के लिए मुझसे अपने कबीला की प्रतिस्पर्धा में जीतने की शर्त रखे हैं। उनके कबीले का यही नियम है की सरदार की बेटी पर कबीले के सबसे वीर योद्धा ही हक होता है। मुझे भी उनकी पुत्री को अपनी पत्नी रूप में पाने के लिए उनके कबीले के नियमानुसार कबीले की प्रतिस्पर्धा में शामिल होकर विजयी होना पड़ेगा।"

" परंतु पुत्र इस काम में बड़ा जोखिम है। तुम्हें ऐसी चुनौती स्वीकार नहीं करनी चाहिए थी। उस कबीला के सरदार की पुत्री से विवाह करने का संकल्प त्याग दो। मान लो अगर प्रतिस्पर्धा में तुम विजयी नहीं होते हो तो, फिर क्या करोगे ?जग हंसाई के साथ-साथ सदा के लिए तुम्हारे माथे पर बंजारे के पुत्रों से हारने का कलंक लग जाएगा।"

" परंतु पिताजी, मैंने यह संकल्प कर लिया है। अब मैं अपना कदम पीछे नहीं हटाऊंगा। ऐसा करके मैं अपनी बाली को क्या जवाब दूंगा ? अपनी नजरें मिलाकर कैसे उससे कह पाऊंगा, कि मैं उससे प्रेम करता हूं ? अब चाहे जो भी हो, मैं जीत जाऊं या हार जाऊं ,मैं अपने कदम पीछे नहीं हटाऊंगा।"

" तुम अपने पिता और एक राजा की बात भी नहीं समझ रहे हो, तुम प्यार में अंधे हो चुके हो। अगर तुम उस प्रतिस्पर्धा में हार गए तो मेरी भी जग हंसाई ही होगी। अपना निर्णय बदल दो।"

" मेरा निर्णय अटल है पिताजी ! आप मुझे अपना आशीर्वाद दीजिए।"

" कतई नहीं ! मैं तुम्हें मौत के मुंह में और इस राज्य को जग हंसाई का चोला पहनाने कभी नहीं भेजूंगा।"

" लेकिन मैंने बाली और उसके बाबा को अपना वचन दिया है।"

" अभी तुम दूधमुहे बच्चे हो। राजनीति और युद्ध से कभी पाला नहीं पड़ा है। अपने वचन को भूल जाओ।"

" मैं बाली को कभी नहीं भूल सकता हूं पिता जी।"

" तुम मेरे बातों का उल्लंघन कर रहे हो।"

" मैं उल्लंघन नहीं आप से याचना कर रहा हूं।"

“मूर्ख! याचना करने से कुछ भी प्राप्त नहीं होता है उसके लिए अपना शौर्य दिखाना पड़ता है।"

" मैं शौर्य दिखाने की ही तो बात कर रहा हूं।"

"नहीं ! तुम बेवकूफी की बात कर रहे हो। अगर तुमने मेरा कहना नहीं माना, तो मैं कल अपने राज्यसभा में तुम्हें राजाज्ञा का उल्लंघन करने के लिए राजदंड देकर तुम्हें राजकुमार की पद से बेदखल कर दूंगा।"

" मैं आपसे बार-बार प्रार्थना कर रहा हूं की मुझे बंजारों की प्रतिस्पर्धा में शामिल होने का मौका दीजिए।"

" मैं ऐसा खतरा मोल नहीं रह सकता हूं। तुम मेरी बात मान जाओ, अन्यथा...."

" मेरे प्रेम के आगे आपका राज्य मेरे लिए तुच्छ है। मेरे प्रेम के मोल के आगे आप की राजगद्दी का कौड़ियों सा भी मोल नहीं है। आपके ऐसे निर्णय से मैं खुद ही दुखी हूं, मुझे आपसे ऐसी उम्मीद नहीं थी।"

" तुम अपने जिद में एक राजा और पिता को मान देना भी भूल गये हो।"

" मैं कुछ नहीं भूला हूं महाराज ! हां, आप यह जरूर भूल गए हैं , कि राजा के ज्येष्ठ पुत्र का राज्य पर जन्मसिद्ध अधिकार होता है। भले आप मुझे राजकुमार के पद से बेदखल कर देंगे, लेकिन अगर मुझमें काबिलियत, हिम्मत और ताकत होगी, तो मैं इसे चुटकियों में प्राप्त कर लूंगा।"

" राज्य पाना बच्चों का हंसी खेल नहीं जो तुम इसे प्राप्त कर लोगे। अभी तो तुमने एक तुच्छ बंजारन के लिए अपने जीवन को दांव पर लगा दिया है। मूर्ख राजकुमार ! तुम राजकुमार क्या उन बंजारों के दामाद बनने के भी काबिल नहीं हो। मेरी नजरों के सामने से दूर हो जाओ।"

भानु प्रताप देव के चिल्लाने से मेघा की नींद खुल गई थी। वह सपने में सूर्या और बाली की कहानी का अपने मन-मस्तिष्क में सजीव चित्रण देख रही थी।

वह सोचने लगी, ' ओह ! यह कैसा सपना था ?' फिर वह पुस्तक लेकर उसे पढ़ने बैठ गई। उसकी सपने में देखी गई सारी कहानी उस पुस्तक की सूर्या और बाली की कहानी से हू-ब-हू मिल रही थी। अब इस घटना के आगे की एक लाइन भी उसे पढ़ने की हिम्मत नहीं हुई। उसने पुस्तक को अपने बिस्तर से बाहर मेज पर इस तरह रख दिया मानो वह उसे काट लेगा। उस पुस्तक को अब भी ऐसे देख रही थी, मानो वह कोई अजूबा हो।

PART -10

पुस्तक को पढ़ने और उसमें बाली तथा सूर्या की कहानी जानने के बाद, मेघा चिंतित हो उठी थी। मेघा सोने के लिए बिस्तर पर लेटी तो उसकी आंखों में नींद नहीं थी। वह चिंतित होकर सोचने लगी, 'मेरे सपने की सारी बातें आखिर इस पुस्तक की बातों से क्यों मिल रही हैं? मैं सपने में खुद को बाली की जगह क्यों महसूस करती हूं ? रंजीत की आंखों में देखकर मैं सम्मोहित क्यों हो रही थी ? कहीं उस रंजीत से मेरा कोई नाता तो नहीं ? पर मैं तो कल उसे पहली बार ही देखी थी ? आखिर वह कौन था ?

उसने मुझे यही पुस्तक क्यों दिया ,जिसे पढ़कर मुझे ऐसा क्यों लगता है, जैसे मैं भी इसी कहानी का हिस्सा हूं ?' ऐसे अनगिनत सवाल मेघा के मन में घुमड़ रहे थे।

सोचते हुए सुबह हो गई ,मगर मेघा को नींद नहीं आई। अहिल्याबाई सुबह जागने के बाद उसे देखने आई।

मेघा को जगी हुई देखकर वह कहने लगी, " बिटिया रानी ! आज इतनी जल्दी कैसे जाग गई हो ?"

" मां ! मेरी तो आधी रात में ही एक सपने के कारण नींद खुल गई थी। उसके बाद फिर नींद नहीं आई । मैं उसी सपने को सोचती रह गई।"

" क्या देखा तुमने सपने में, जो उसे देखकर अब तक तुम्हें नींद नहीं आ रही है ?"

" मत पूछिए ,सपना कितना डरावना था । यह पुस्तक मुझे अच्छी नहीं लग रही है ?"

" जब तुम्हें वह पुस्तक अच्छी नहीं लग रही है ,तो फिर क्यों पढ़ रही हो ? मैंने तो तुम्हें रात्रि में ही इसे पढ़ने के लिए मना किया था न , फिर भी तुम नहीं मानी ?"

" मैं क्या करूं मां , मुझे इस पुस्तक को पढ़े बिना चैन भी नहीं मिल रहा था।   पढ़ते-पढ़ते सो गई थी, तो पढ़ते समय और सपने में भी खुद को इस कहानी का हिस्सा महसूस कर रही थी। मुझे न जाने क्यों ऐसा हो रहा है ?"

" यह सब और कुछ नहीं है बेटी ! इस पुस्तक की कहानी तुम्हारे मन-मस्तिष्क में घूमड़ रही होगी, इसलिए तुमने सपने में इस कहानी में खुद को देखी होगी।"

" नहीं मां ! ऐसी बात नहीं है। मेरे सपने की बातें भला इस पुस्तक में कैसे संभव हो सकती है ? मैं इस पुस्तक के जिस भाग को आज पढ़ी भी नहीं थी, वह मैं सपने में देख रही थी। आप ही बताइए, भला ऐसा कैसे संभव हो सकता है ?"

" यह इत्तेफाक के अलावा और कुछ नहीं है। तुम कहानी को पढ़ते हुए इसमें इतनी मशगूल हो गई हो, जिसे कि तुम्हें सोते-जागते हर वक्त इसी कहानी के पात्र नजर आते हैं और खुद को भी इसी कहानी का हिस्सा महसूस करती हो।"

" अब मैं आपको कैसे समझाऊं ,मेरे साथ क्या घटित हुआ ?"

" मुझे समझाने की कोई जरूरत नहीं है। हां, तुम खुद ही यह समझ लो, ऐसा होता है।"

मेघा के समझाने पर भी बात अहिल्याबाई के पल्ले नहीं पड़ रहा था, आखिर मेघा क्या कहना चाहती है। मेघा ने निश्चय किया। आज वह किसी बहाने अलवर जाकर रंजीत को ढूंढने की कोशिश करेगी, वही है जो मुझे कुछ बातें बता सकता है। आखिर उसने यही पुस्तक मुझे पढ़ने के लिए क्यों दिया ? सूर्या और बाली बंजारन से हमारा क्या रिश्ता है ?'

मेघा ने मीता को भी सारी बातें बतायी। मीता को मेघा की बातें सुनकर आश्चर्य हो रही थी। मेघा के बहुत मनाने पर वह आज फिर अलवर चलने के लिए तैयार हुई थी।

वह कहने लगी, " मैंने जब कल उस लड़के को तुम्हारी आंखों में झांकते हुए देखा था। तब तुम्हें चक्कर भी आ रहा था , मुझे तो कल ही लग रहा था, जैसे उसने तुम पर कोई जादू-टोना कर दिया हो।"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। वह भला मुझे जादू क्यों करेगा ?"

"क्यों नहीं ? अगर उसने तुम्हें कुछ किया नहीं ,तो फिर तुम क्यों उसे ढूंढने के लिए परेशान हो रही हो ? "

" यूं ही ,बस एक बार उसे देखने को जी चाहता है। सोचती हूं,मिलकर कुछ बातें करूंगी।"

" अरे वाह ! तुम्हें और कौन सी बातें करनी है उससे ?"

" उसकी आंखों में ही नहीं ,उसकी पुस्तक पर भी काला जादू है।"

" क्या कह रही हो तुम ? तुमने यह सब कैसे जाना ?"

" वह पुस्तक, मुझे ज्ञात हो रही है।"

" वह कैसे ?"

" मेरे साथ कई घटनाएं हुई, पुस्तक पढ़कर में खुद को उस कहानी की नायिका की तरह महसूस करती हूं। फिर सपने में, मैं उस पुस्तक की घटनाओं को बिना पढ़े ही जान गई।"

" ओह ! यह भला कैसे संभव है ?"

" यही तो मैं सोच रही हूं ?"

" तुम उससे मिलकर क्या कहोगी ?"

" यही पूछूंगी, आखिर वह कौन है और उसने मुझे यही पुस्तक पढ़ने के लिए क्यों दिया था ?"

" यह तो इत्तेफाक भी हो सकता है। इतने बड़े शहर में तुम से कहा ढूंढोगी ?"

" जहां वह कल मिला था ?"

" कोई जरूरी नहीं ,वह आज भी हमें वही मिल जाएगा, अगर नहीं मिला तो ?"

" परंतु कोशिश करने में क्या जाता है। मन में सवाल बार-बार तो नहीं उठेगा न, कि मैंने उसे ढूंढने की कोशिश नहीं की थी।

" तुम्हें तो मालूम है न, तुम्हारे ऊपर किसी प्रेत का साया है, जो तुम्हें रात्रि में अपने पास लेकर चला जाता था। "

" हां, मम्मी-पापा भी यही कहतें हैं ,परंतु मुझे तो कभी ऐसा महसूस नहीं हुई। अब तो कई दिनों से सब कुछ ठीक भी हो गया है अब मैं रात भर अपने कमरे में ही रहती हूं और मेरे कमरे का दरवाजा खुला रहता है।"

" परंतु वह रंजीत कहीं वही प्रेत हुआ तो ? हो सकता है ,वह तुमसे मिलने के लिए वेश बनाकर तुम्हें यह पुस्तक अपनी कहानी जानने के लिए दिया हो ?"

" अब जो भी होगा, देखूंगी । लेकिन एक समस्या है। मम्मी को क्या बताऊंगी ? अब तो कोई बहाना भी नहीं है।"

"तुम भी अलवर में ही कोई पढ़ाई कर लो। मैं तो अगले महीने आगे की पढ़ाई के लिए अलवर चली जाऊंगी। अगर तू भी अपने मम्मी-पापा को मना लो ,फिर तो अच्छी जोड़ी जम जाएगी।"

" देख रही हूं, मम्मी राजी होगी तब तो ? मेरी मम्मी अब मुझे आगे पढ़ाने-लिखाने की फिक्र में नहीं है ।अब तो वह मेरी विवाह करने को सोच रही है ?"

" अपनी आगे की पढ़ाई की आवश्यक कार्य बता देना ।कहना अभी तुम कुछ वर्ष और पढ़ना चाहती हैं।"

दोनों ने तय किया अपनी आगे की पढ़ाई के लिए अब वे दोनों अलवर ही जाएंगे। मेघा को आज अपनी किस्मत पर भरोसा था। अपनी मां से कॉलेज में नामांकन के लिए बुलावे की बात कहकर मेघा और मीता दोनों ने साथ-साथ अलवर जाने की अनुमति ले ली।

PART -11

मेघा और मीता दोनों अपनी मां से बहाने बनाकर अलवर के लिए निकलीं। वहां पहुंचकर पूरा दिन सड़कों और फुटपाथों की चक्कर लगाती रही मगर रंजीत उन्हें कहीं नहीं मिला। लोगों से पूछने पर भी किसी ने उसके बारे में कोई खबर नहीं दिया।

अब वे दोनों थक-हारकर एक प्याऊ के पास आकर बैठ गई। मीता अपने फोन से रंजीत की एक तस्वीर निकालकर मेघा को दिखाने लगी, जिसे उसने कल क्लिक की थी।

" तुम इसे पहले क्यों नहीं दिखायी ? अब जब हम थक-हारकर बैठ गएं, तब यह तस्वीर निकाल कर दिखा रही हो ? अगर पहले इसे दिखाती ,तो हम लोगों को इसे दिखाकर उसे ढूंढते , तब कितनी आसानी होती ?" मेघा मीता पर गुस्सा करती हुई बोली।

" मुझे पहले इसके बारे में कुछ भी ध्यान नहीं था, कि मैंने कल उसकी कोई तस्वीर भी ली थी। अभी जब मैं अपना फोन खोल कर देखने लगी, तभी मुझे उसकी तस्वीर दिख गई।"

" अच्छा चल एक बार फिर कोशिश करते हैं कल जहां वह हमें मिला था। हम वहां के आसपास के दुकानदारों को इसे दिखा कर पूछते हैं। कोई न कोई अवश्य ही उसे जानता होगा।"

" थोड़ा आराम कर लो न ,फिर चलते हैं।"

" मेरे पास इतना समय नहीं है। कुछ देर में ही शाम हो जाएगी। हमें समय से घर भी पहुंचना है, अन्यथा घर पहुंचने में देर हो जाएगी।"

" चल, मैं जानती हूं तू मानेगी नहीं ।" मीता उसके साथ चलने का उठ खड़ी हुई। दोनों सहेलियां अब ओवर ब्रिज के पास आकर उसे ढूंढने लगीं। आसपास के दुकानदारों को उसकी तस्वीर दिखाकर उसके बारे में पूछा। लेकिन किसी ने उसे पहले कभी भी देखने की बात स्वीकार नहीं किया।

मेघा और मीता को दुकानदारों की बात सुनकर आश्चर्य हो रही थी। आखिर इन्होंने रंजीत को

पहले कभी क्यों नहीं देखा है ? कल तो वह यहीं अपनी पुस्तके बेच रहा था ?

रंजीत को ढूंढते-ढूंढते जब दोनों हार गई, शाम भी ढलने को थी। अगर अब भी वे दोनों वहां से नहीं निकलती तो उनकी आखिरी बस भी छूट जाती। दोनों ने जल्दी से घर के लिए रुख किया। इत्तेफाक से उन्हें बस मिल गई।

दोनों सहेलियां ईश्वर को धन्यवाद करती हुई बस में सवार हो गई। रंजीत के न मिलने के कारण मेघा बहुत परेशान थी।

" तुम इतनी भी बेचैन मत रहो, अगर उसका मिलना होगा, तो वह हमें एक दिन अवश्य ही मिल जाएगा। अभी तो एक महीने बाद से मैं इसी शहर में रहना शुरू करूंगी। तुम्हारी मां भी मान ही गई हैं। फिर तुम भी तो रहोगी ही। "

" उसे देखे बिना मुझे एक पल गुजारना मुश्किल हो रहा है ,तुम एक महीने बाद की बात कह रही हो ?"

" अगर सब्र नहीं है ,तो फिर दो दिन बाद भी कोई बहाना करके आ जाना ।"

" अब मैं उसे ढूंढने के लिए नहीं आने वाली हूं। केवल मेरी गरज थोड़ी न है ? अगर वह फिर से मुझसे मिलना चाहता है ,तो उसे भी पहल करनी चाहिए। वह कह रहा था, वह मेरे पिताजी को जानता भी है, तो अब उसे ही मेरे घर आना चाहिए।"

फिर तो तुम आराम से सो जा और सपनें देख। अभी बस को अपनी ढाणी पहुंचने में एक घंटे का समय है।" मीता ऐसा कहकर अपने कान में ईयर फोन लगाकर अपने फोन से प्रतिलिपि एफ एम कि ऑडियो सुनने लगी।

" यह तुमने फिर से अपने कान में ढ़क्कन क्यों ले लिया ? क्या तुम मुझसे बातें नहीं कर सकती हो ?"

" नहीं ! अब मैं दिन भर तुम्हारी बातें सुनते-सुनते पक गई हूं। मैं अभी कल से ही एक उपन्यास की ऑडियो सुन रही हूं।"

" कौन सी उपन्यास की ?"

" क्यों रूठ गए ?"

"ओह ! पर इसे किसने लिखा है ?"

" राम बिनोद कुमार ने "

" ऐसा क्या है, इस उपन्यास में जो तू कल से इसे सुनने में लगी हुई है ? आते समय भी लगता है, तुम यही सुन रही थी ?"

" हां ,मैं इस इस उपन्यास को पढ़ी भी हूं।"

" फिर भी सुन रही हो ? क्या तुम्हारा मन नहीं उबता ? पहले पढ़ी और अब सुनने में लगी हो ? एक ही बातें बार-बार पढ़ने-सुनने से बोर नहीं होती हो ?"

" अरे नहीं ! बोर होने का तो सवाल ही नहीं उठता है। तुम इसे दस बार भी पढ़ लोगी और दस बार भी सुनोगी तो भी तुम्हारा जी नहीं भरेगा।"

" क्यों , ऐसी क्या खास बात है इसमें ?"

" इसमें गुरुदेव की मिशन की सारी बातें हैं। एक क्रांति है, नारी जागरण है, तरह-तरह की शिक्षाएं है, दुनिया की लोगों की चालाकियों का काट है, जीवन है ,उसका रहस्य है, पल-पल पर रहस्य और रोमांच है। सबसे बड़ी बात यह अपनी ही कहानी है।"

"अपनी कहानी से मतलब ?"

"मतलब यह एक नारी की संघर्ष की अनुपम गाथा है। जिसमें वह अंततः अपने आदर्श और उसूलों पर चलते हुए जीवन के हर क्षेत्र में सफलता का मार्ग प्रशस्त करती जाती है।"

ओह ! बहुत खूब ,फिर तो मैं भी सुनती हूं।"

" नहीं ! अभी इसे तुम मत सुनना, अन्यथा इसी में खो जाओगी। फिर रंजीत को भी नहीं ढूंढ पाओगी। तुम्हारे लिए 'ऋषि चिंतन के सानिध्य में' की धारावाहिक है। गायत्री परिवार के संस्थापक गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा लिखित अखंड ज्योति पत्रिका के संकलित भाग हैं- 'ऋषि चिंतन के सानिध्य में' इसे तुम पढ़ भी सकती हो और चाहे तो सुन भी सकती हो। राम विनोद कुमार ने इसे अपनी आवाज में रिकॉर्ड किया है ,जो इच्छा करें वह करो। इससे तुम्हारे मन को परम शांति मिलेगी और तुम्हारे जीवन की सारी समस्याओं का तुम्हें हल मिल जाएगा।"

" क्या इससे सुनने से मेरा रंजीत मुझे मिल जाएगा ?"

" हां ,पहले इसे सुनकर तो देख ! तुम्हारी समस्या अवश्य दूर हो जाएगी।"

" मेघा भी प्रतिलिपि कहानी एप्प पर ऋषि चिंतन के सानिध्य में का पाठ सुनने लगती है। पाठ को सुनकर उसे परम आनंद और असीम ऊर्जा प्राप्त होती है।

दोनों सहेलियां अपनी-अपनी ऑडियो सुनने का आनंद ले रहे थे ,तभी कंडक्टर ने पुकारा, " सांगा खेड़ा वाले आ जाणा !'

" चल, अपनी ढाणी आ गई।" मीता ने मेघा से कहा।

दोनों सहेलियां उठकर बस से नीचे उतर गई। अभी अपनी गांव की सड़क पर करीब पचास मीटर ही आगे बढ़ीं थीं, तभी कुछ दूरी पर रंजीत सांगा खेड़ा की ओर से आता हुआ मीता को दिखाई दिया।

" वह देख ! उधर से कौन चला आ रहा है ?" मीता ने धीरे से उंगली से दिखाकर मेघा को बोली।

मेघा उस ओर देखने लगी ,वह रंजीत को देखकर खुश हो गई।

PART -12

कुछ ही देर में मेघा तथा मीता रंजीत के आमने-सामने थे। रंजीत मेघा को देखते ही बोल उठा, " राम राम मेम साहब !"

" राम-राम ! तुम इधर कैसे ?"

" सच बताऊं मेम साहब तो, मैं आपके गांव में आपसे मिलने ही आया था।"

" मुझसे मिलने ,अरे वाह ! और मैं तुमसे मिलने शहर चली गई थी। लेकिन दिनभर भटकने और पूछने के बाद भी मुझे तुम्हारे बारे में कोई भी कुछ नहीं बताया।"

" मेम साहब ! आपको मेरे बारे में कोई कुछ बताता कैसे ? मैं तो अलवर बहुत कम ही जाता हूं। कल पुस्तकें खरीदने गया था, तो सोचा रास्ते में ही कुछ पुस्तके बेच लेता हूं। मैं तो यहीं अपने तहसील पर ही कुछ पुस्तकें बेच लेता हूं।

" ओह ! तभी तो ..."

" लेकिन तुम मुझसे मिलने मेरे गांव क्यों गए थे ? क्या तुम मेरे घर भी गए थे ?"

" हां, मैं आज पूरा दिन आपके घर का चक्कर लगाता रहा हूं। कल जबसे आपको देखा हूं,मैं आपकी आंखों में खो गया हूं। हर पल दिन-रात, उठते-बैठते, सोते-जागते मुझे बस आपका ही चेहरा दिखाई देता है।"

" ऐसा क्या ! मेरा भी तो कुछ ऐसा ही हाल है। न जाने तुमने मुझे कैसी पुस्तक दिया है ? उससे पढने पर मैं खुद को उस कहानी में महसूस करती हूं। क्या तुम सूर्या को जानते हो ?"

" कौन सूर्या ?"

" वही शीतल गढ़ का राजकुमार सूर्य प्रताप देव ! "

" नहीं मेम साहब ! न तो मैं शीतल गढ़ जानता हूं, नहीं सूर्य प्रताप देव को ही !"

" ओह ! लेकिन आपने मुझे वह पुस्तक कहां से लाकर दिया है ?"

" कौन सी पुस्तक ?"

" आप इतना जल्दी भूल गएं ? वही जो आपने मुझे कल अलवर में दिया था।"

" कौन सी, क्या नाम था उसका ?"

" राजकुमार सूर्या और बाली बंजारन की कथा वाली।"

" दरअसल मैं भी उसे नहीं जानता हूं। कल जब मैं दुकान से पुस्तक लेकर लौट रहा था, तभी मुझे बंजारे का एक लड़का मिला। वह मुझे यह पुस्तक देकर आपको देने को बोला था।"

" मुझे देने को बोला था, क्या कहा था, उसने ?"

" उसने मुझे यह पुस्तक देकर कहा था, की आज तुम्हें पुल के नीचे वाली प्याऊ के पास एक लड़की मिलेगी। तुम उसे यह पुस्तक दे देना। मैं उससे आगे की बात पूछता इससे पहले वह चला गया था। कुछ देर बाद ही मुझे चक्कर आने लगा । मुझे अपने शरीर में सनसनी सी महसूस हो रही थी। मैं वहीं फुटपाथ पर बैठकर खुद को सामान्य करने की कोशिश करने लगा था।। उसके बाद मुझे प्याऊ के पास तुम अपनी सहेली के साथ मिली थी। मैं यंत्रवत तुम्हारे सामने आकर खड़ा हो गया था। कुछ देर बाद मैंने देखा तुम्हें भी मेरी तरह चक्कर आने लगे थे। मैं घबरा गया था इसलिए मैं तुम्हारे पास जाकर खड़ा हो गया था। फिर मैंने वह पुस्तक तुम्हें दे दिया ,जिसे मुझे उस लड़के ने दिया था।"

" ओह ! शाम ढलने को है, क्या तुम्हें घर नहीं जाना है ?"

" मैडम जी ! आप मिल गई, अब आप मेरी चिंता मत कीजिए। मैं अपने घर पहुंच जाऊंगा। मैं दिन भर आपकी ही राह देख रहा था। मेरा परिवार यहीं पास के ढाणी के सड़क के किनारे पर रहता है।"

" फिर तुम्हें मेरी याद कैसे आ रही थी ?"

" कल आपके चले जाने के बाद मेरी आंखों के सामने से आपका चेहरा उतर ही नहीं रहा था। जब

मैं अपने घर आया, तब भी मेरे आंखों के सामने आपका ही चेहरा घूम रहा था।"

" लेकिन मेरे आने के बाद तुम घर कैसे आए ? उस समय तो अंतिम बस भी छूट गई थी।"

" हम कुछ बंजारे अपनी टोली से एक ऊंट गाड़ी लेकर गए थे। कल हम सब उसी से घर वापस आ गए थे।"

वहां दूर देखो ! लगता है कोई इधर ही आ रहा है। हमें भी अब चलना चाहिए। अब ठीक है। मुझे तुम्हें ढूंढने कहीं और नहीं जाना पड़ेगा। तुम भी जाओ कभी तुम्हें मुझसे मिलने की इच्छा होगी तो मेरे गांव आ जाना। मैं तुम्हें अपने घर पर ही मिलूंगी। मेरा घर देखे हो न ?"

" जी हां मेम साहब ! सांगाखेड़ा में भला आपका घर कौन नहीं जानता है ? आपके पास से दूर जाने का मेरा मन तो नहीं कर रहा है ,परंतु आप कहती हैं तो जा रहा हूं।"

" हां ठीक है तुम जाओ, अन्यथा हम तीनों को कोई यहां एक साथ देख लेगा तो न जाने क्या सोचेगा ?"

" वैसे तो वह हमें देख ही नहीं पाएगा , मेम साहब ! " मेघा महसूस किया रंजीत की आवाज के साथ-साथ उसके चेहरे का भाव बदल रहा था।

" क्यों , कैसे ?"

" अगर आपको देखना है तो मैं आपको दिखाता हूं। यह देखिए अपनी सहेली को, क्या अब वह आपको नजर आ रही हैं ?"

" अरे ! तुमने मीता को क्या कर दिया ?"

" मैडम जी मैंने मीता को कुछ नहीं किया है वह अभी भी आप के बगल में ही खड़ी हैं। आप बगल में हाथ बढ़ाकर महसूस कीजिए आपकी सहेली आपके पास ही हैं।"

अब मीता कहीं भी दिखाई नहीं दे रही थी, मगर जब उसने अपनी बायीं ओर अपने हाथ बढ़ा कर देखी, तो अदृश्य मीता की स्पर्श पाकर वह डर गई।

" आखिर यह कैसा जादू है ?"

" मेम साहब ! यह कोई जादू नहीं। हम अदृश्य लोगों की पारलौकिक शक्तियां हैं। आप सूर्या के बारे में पूछ रही थी न, आपकी पूर्व जन्म का सूर्या मैं ही हूं ? और आप ही मेरी बाली हैं।"

" क्या , मैं ,और बाली ?"

" हां मेम साहब i क्या अभी आपको विश्वास नहीं हो रहा है ?" तभी वह दूर से आता हुआ व्यक्ति तीनों के पास से होता हुआ गुजर गया। मगर इन लोगों की तरफ आंखें उठाकर भी नहीं देखा।" मेघा यह देखकर आश्चर्य कर रही थी।

" आपने देखा न ? मैं अपने सूक्ष्म रूप में आपके सामने प्रकट होकर आप को डराना नहीं चाहता था , इसलिए इस रंजीत के अंदर खुद को समाहित कर आपसे मिलने का निर्णय लिया। मैं आपको वर्षों से जी जान से प्रेम करता हूं। आपकी यादों में तड़प कर मर तो गया था ,मगर दूबारा जन्म नहीं ले सका। मैं आपसे इतना बेपनाह प्यार करता हूं, कि एक पल आपको देखे बिना चैन नहीं पड़ता है। आपके गुरुदेव कमाल गिरि ने तो मुझे आपके घर जाने के सारे दरवाजे बंद कर दिए थे। फिर मजबूरन हमें स्थूल रूप में आने के लिए रंजीत का सहारा लेना पड़ा। मुझे आशा है रंजीत के रूप में अपने वर्षों के बिछड़े हुए प्रेमी को अवश्य महसूस कर पाएंगी। ठीक है अब मैं चलता हूं ,आप उस कहानी की पुस्तक को पूरी पढ़िएगा। फिर आपको स्वयं ही हमारे जीवन के सभी बातों का ज्ञान हो जाएगा।"

मेघा रंजीत के अंतःकरण में स्थित सूर्या को महसूस कर स्तब्ध थी।

PART -13

रंजीत वहां से आगे बढ़ गया। मेघा और मीता भी घर वापस लौटने लगीं। मेघा को ऐसा महसूस हो रहा था, मानो वह कोई सपना देख रही है। मीता के साथ वह यंत्रवत घर की ओर बढ़ती चली जा रही थी।

घर पहुंचने पर मेघा की मां उसकी हालचाल पूछने लगी। वह बिना कुछ बोले ही अपने कमरे में चली गई। उसकी ऐसी दशा देखकर उसकी मां चिंतित हो गई।

वह पीछे-पीछे उसके कमरे में आई और कहने लगीं," बिटिया ! क्या हुआ, तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न ?"

मेघा अपनी मां को एकाटक अनजाने की तरह देख रही थी। फिर सहमकर बोली, "मां ! न जाने क्यों मेरा सिर घूम रहा है।"

" इतनी गर्मी में दिनभर परेशान होकर घूमती रहोगी, तो और क्या होगा ? पानी का एक बोतल तक नहीं लेकर गई थी।"

" मां ,मैं वाटर बॉटल खरीद ली थी। पानी तो दिन भर पीती ही रही हूं। बस मुझे थोड़ी थकान हो रही है।"

" अच्छा तुम थोड़ी देर आराम कर लो, मैं तुम्हें चंपी कर देती हूं।" मेघा अपने पलंग पर लेटकर आराम करने लगी और उसकी मां अहिल्याबाई हल्के हाथों से उसका सिर दबाने लगी।

कुछ देर के पश्चात वह स्वयं ही उठ कर बैठ गई और वह पुस्तक पढ़ने लगीं।

दूसरे दिन सूर्य प्रताप देव (सूर्या) रामसिंह बंजारे के पास गया और अपने पिता द्वारा कही हुई बातें कही गई सारी बातें राम सिंह को बताया।

सूर्या की बात सुनकर रामसिंह बहुत चिंतित होकर कहने लगा," राजकुमार ! मैंने आपको पहले

ही कहा था , यह मार्ग बहुत कठिन है। आपमें और मेरी बाली में कोई मेल नहीं है। ऐसे मार्ग पर चलने से आपको कष्टों के सिवाय और कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। आप अपनी जिद छोड़ दीजिए और राजमहल वापस लौट जाइए । ऐसा करने से आपके पिताश्री आपको अवश्य ही माफ कर देंगे।"

" मैं अपनी बाली के लिए अपनी राजकुमार की पदवी छोड़ कर आया हूं। अब मैं आपकी तरह ही इस राज्य का एक आम नागरिक हूं। आपको तो खुश होना चाहिए अब मैं कोई विशेष नहीं रहा। आप प्रतिस्पर्धा की आयोजन का ऐलान कीजिए मैं प्रतिस्पर्धा में भाग लेने के लिए तैयार हूं।"

राजकुमार की बात सुनकर रामसिंह दुखी होकर बोला, " राजकुमार ! यह बंजारों की टोली की प्रतियोगिता में भाग लेना कोई हंसी खेल का काम नहीं है। आपके जैसे सुकोमल राजकुमार बंजारों की इस प्रतियोगिता में चुनौतियों का सामना कैसे करेंगे ?"

"बाबा! आप चिंता मत कीजिए। मैं हर तरह की चुनौतियों का सामना कर लूंगा ।"

राम सिंह राजकुमार के मुख से अपने लिए बाबा शब्द सुनकर बहुत खुश हुआ और बोला," मैं आपकी जज़्बातों और हौसले का सम्मान करता हूं। परंतु आप को कुछ हो गया तो, मैं राजा साहब को क्या जवाब दूंगा ?

" मुझे कुछ नहीं होगा । बाली का अमर प्रेम हमारे साथ है।आप मेरी चिंता न करके प्रतिस्पर्धा की घोषणा कीजिए।"

" इसका आयोजन यूं ही कभी भी नहीं होता है । प्रत्येक वर्ष ज्येष्ठ महीने की तृतीया तिथि को हम अपने वंशज महाराणा प्रताप की जयंती मनाते हैं। उसी दिन हमारे कबीले के युवा अपनी वीरता सिद्ध करने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। इस प्रतिस्पर्धा में जो विजयी होता है, उसे कबीले की प्रताप की उपाधि दी जाती है। कबीले का सरदार उसे अनमोल वस्तुएं प्रदान करता है। अगर उसके पास विवाह योग्य अपनी पुत्री हो, तो वह अपनी पुत्री को उस युवा प्रताप को पत्नी के रूप में वरण करने की विनती करता है। अगर कभी कबीला के सरदार को कोई विवाह योग्य पुत्री नहीं हो ,तो कबीले के अन्य सदस्य उसे अपनी पुत्री से विवाह करने का प्रस्ताव देते हैं। आज से ठीक दो महीने बाद, ज्येष्ठ तृतीया को प्रतिस्पर्धा का आयोजन होगा। तबतक आप कबीले के युवा वीरों के साथ प्रतिस्पर्धा का अभ्यास कर सकते हैं।"

राम सिंह की बातें सुनकर सूर्या खुश हुआ और नित्य बंजारे लड़कों की टोली में प्रतिस्पर्धा का अभ्यास करने लगा। खाली समय में वह राम सिंह के साथ उसके व्यापार कार्य में उसका हाथ बंटाया करता था।

बदले में राम सिंह की पत्नी गुजरी देवी उसे अपने बेटे सा प्यार करने लगी थी।

बाली को अपनी नजरों से अपने सामने देखकर सूर्या की सारी थकान दूर हो जाती थी। पूरे नगर में चर्चा हो गई थी की राजा भानु प्रताप देव ने अपने पुत्र सूर्य प्रताप देव को राजकुमार के पद से बेदखल कर दियें हैं। वही सूर्या अब बंजारों की टोली में उन्हीं के साथ रहता है।

बंजारों की टोली में भी सभी बंजारों के बीच यह चर्चा छिड़ गई थी, की राजकुमार अब सरदार की बेटी बाली के प्रेम में पागल होकर कबीला के सरदार के घर डेरा डाले हुए हैं।

आखिरकार ज्येष्ठ तृतीया की तिथि आ ही गई। प्रतियोगिता का आयोजन आज ही होना था। बंजारों के सरदार राम सिंह ने राजा साहब भानु प्रताप देव को भी मुख्य अतिथि के रूप में अपने कबीले के वीर युवायों की प्रतिस्पर्धा देखने के लिए आमंत्रित किया था।

राजा साहब को ज्ञात था कि उनका बेटा उसी कबीले में बंजारों के बीच रह रहा है। इस कारण उन्होंने अपना कोई प्रतिनिधि भी प्रतिस्पर्धा देखने के लिए नहीं भेजा। उन्हें डर था की राजकुमार के परास्त हो जाने पर वहां उनके मान-सम्मान की दुर्गति होनी तय है।"

प्रतिस्पर्धा शुरू हुई, एक चरण के बाद दूसरा चरण, दूसरा चरण के बाद तीसरा चरण, तीनों चरणों में राजकुमार सूर्या सभी बंजारे वीरों से श्रेष्ठ प्रदर्शन करने के बाद सर्वश्रेष्ठ स्थान पर विजयी हुआ।

राम सिंह को खुशियों का ठिकाना नहीं था। परंतु बंजारों की टोली में इस बात के लिए राजकुमार सूर्या से वैमनस्य की लहर दौड़ गई थी। आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ था, जो बंजारों की प्रतिस्पर्धा में जीतकर सरदार की बेटी को कोई राजकुमार अपनी दुल्हन बनाया था।

बंजारों की प्रतिस्पर्धा में सूर्या के जीत जाने के बाद प्रजा में भी राजकुमार सूर्य प्रताप देव के प्रति एक उत्साह व्याप्त था। दबी ज़ुबान से ही ,प्रजा में इस बात की चर्चा होने लगी थी की राजकुमार के पद का वास्तविक उत्तराधिकारी राजकुमार सूर्या ही है।

दूसरे दिन ही कबीले की रीति रिवाज में धूमधाम से सूर्या को कबीले का प्रताप घोषित किया गया और कबीले के सरदार की बेटी बाली से राजकुमार सूर्या का विवाह कर दिया गया।

लेकिन इसी दिन से राजकुमार सूर्या और बंजारा सरदार की बेटी बाली के लिए कांटो के दिन शुरू हो गए थे। अब राजमहल में उसका भाई समेत कबीले में भी उसके कई दुश्मन थे।राजकुमार के पद से बेदखल सूर्या भी अब अपने उत्तराधिकार का राज्य पाना चाहता था।

PART -14

भले ही राज परिवार और बंजारों के कबीले में सूर्या और बाली के कुछ दुश्मन हो गए थे, परंतु आज भी सूर्या प्रजा के लिए उनका नायक ही था।

सूर्या को राजमहल से निष्कासित कर देने के बाद राजा भानु प्रताप देव ने अपने अनुज पुत्र चंद्र प्रताप देव (चन्द्रा)को शीतल गढ़ का युवराज घोषित कर दिया गया था।

सूर्या पहाड़ों और जंगलों में रहते हुए भी, अपने पिता के राज्य शीतल गढ़ की सुरक्षा में ही लगा रहता था। एक बार पड़ोसी राजा ने सूर्या के पास राजदूत भेजकर सूर्या और उसकी पत्नी बाली को अपनी पुत्री के शुभ विवाह के अवसर पर आतिथ्य के लिए निमंत्रित किया। सूर्या राजनीतिक कारणों से पड़ोसी राजा के निमंत्रण को अस्वीकार नहीं कर सका था।

इसी बीच दूसरे पड़ोसी राजा ने शीतल गढ़ पर आक्रमण कर दिया। सूर्या को वहीं दूसरे राज्य के राजकीय आतिथ्य में रहने के कारण इस बात की जानकारी नहीं मिली, कि दूसरे पड़ोसी राजा ने उसके पिता के राज्य शीतल गढ़ पर आक्रमण कर दिया है।

जैसे ही बंजारों के सरदार राम सिंह को यह बात मालूम हुई, वह भागता हुआ उस राजा के दरबार में पहुंचा, जहां सूर्या आतिथ्य में था। उस राजा ने सूर्या से राम सिंह की मुलाकात नहीं होने दिया। वह राजा अपने मुखबिरों से यह जान गया था, कि बंजारों के कबीले का सरदार राम सिंह ही सूर्या का ससुर है। सूर्या को अपने आतिथ्य में निमंत्रित करना उस राजा की ही चाल थी। वह राजा भी उस आक्रमणकारी पड़ोसी राजा से मिला हुआ था।

राम सिंह सूर्या से मिलने के लिए परेशान होकर निराश हो गया। उसे समझ नहीं आ रहा था, वह किस तरह राजकुमार सूर्या को उसके राज्य पर आक्रमण की सूचना दे।

परन्तु राम सिंह भी हार नहीं मानने वाला था। उसने अपनी बात न बनते देखकर अपने कबीले के कुछ वीर योद्धाओं को अपने साथ लेकर महल में प्रवेश करने की योजना बनाने लगा। परंतु महल में प्रवेश करना इतना आसान नहीं था।

फिर भी वह एक रात अपने सहयोगियों को साथ लेकर राजा के सिपाहियों के वेश में चुपके से उस किले में प्रवेश कर गया, जहां राजकुमार सूर्या और उसकी पत्नी बाली को आतिथ्य के लिए

रखा गया था।

किले में हर जगह सिपाहियों का पहरा था। राम सिंह और उसके सहयोगी भी सिपाहियों के वेष में ही महल में घुसे थे, जिस कारण उन्हें रात्रि में महल के अंदर अधिक दिक्कत नहीं हो रही थी। ढूंढते हुए अब वे सूर्या के कक्ष तक जा पहुंचे थे। बाहर सिपाहियों का पहरा था। राम सिंह ने जब एक खास संदेश देने के लिए सूर्या से मिलने की बात कहा, तो सिपाहियों के अधिकारी को रामसिंह पर शक हो गया। इस तरह राम सिंह पकड़ा गया।

फिर भी वह हार नहीं मानना चाहता था। उसने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू किया। उसकी आवाज सुनकर राजकुमार सूर्या और राम सिंह की बेटी बाली परकोटे से देखने लगें ,कि आखिर बाहर क्या हो रहा है।

उन्हें राम सिंह को यहां महल में सिपाहियों के बीच बंदी के रूप में देखकर आश्चर्य हो रहा था।

राम सिंह राजकुमार सूर्या और बाली का नाम लेकर जोर-जोर से चिल्ला रहा था, " राजकुमार !!! आपके राज्य पर आक्रमण हो गया है ! आपके पिता को आपकी सहायता की आवश्यकता है। राजकुमार......."

यह बात सुनकर सूर्या और बाली चिंतित और व्यग्र हो रहे थे। तभी राजकुमार सूर्या ने कबीले के कुछ वीर जवानों को सिपाहियों के वेश में इशारे करते हुए देखा। उन दोनों ने उन बंजारे सिपाहियों को अपने कक्ष के अंदर बुलाया। सारी स्थिति जानकर उन सिपाहियों के साथ अपनी पत्नी बाली को लेकर राजकुमार सूर्या पीछे के गुप्त दरवाजे से निकलकर महल की चारदीवारी को फांदते हुए ,किसी तरह उस महल से बाहर निकलने में सफल हुआ।

राम सिंह के अन्य साथी के साथ सूर्या महल से भागने में कामयाब हो गया। परन्तु राम सिंह को उस महल में बंदी बना लिया गया था। दूसरे दिन ही जब सूर्या अपनी बंजारे योद्धाओं की फौज के साथ रणभूमि में पहुंचा, उसने यह पाया कि शीतल गढ़ के सिपाहियों में निराशा घेर चुकी थी। इसका कारण राज कुमार चंद्रा को बंदी बनाया जाना था। महाराज भानु प्रताप देव ने अपने पुत्र के बंदी बनाए जाने से परेशान थे। वह हथियार डालने वाले ही थे, कि राजकुमार सूर्या ने अपने बंजारों की फौज के साथ वहां पहुंचकर उन्हें हिम्मत दिया।

उस दिन की लड़ाई में सूर्या और उसके पिता की सेना का पलड़ा भारी रहा । शाम तक उन्होंने उस राज्य की राजा को ही बंदी बना लिया। यह उनके लिए बहुत बड़ी कामयाबी थी।

प्रत्यर्पण के रूप में सूर्या ने उस राज्य के राजकुमार से उसके पिता को मुक्त करने के बदले अपने छोटे भाई राजकुमार चंद्रा को मुक्त करने की बात पर संधि करना तय किया।

युद्ध में शीतल गढ़ और पड़ोसी राजा के बीच में राजकुमार चंद्रा और उस राजा को मुक्त करने की बात पर संधि हो गई। राजा भानु प्रताप देव ने अपने राज्य की सैन्य स्थिति को समझते हुए अपने बड़े पुत्र राजकुमार सूर्या को शीतल गढ़ चलकर राज्य की गद्दी संभालने की विनती किया। पिता की आज्ञा को सूर्या ने सहर्ष स्वीकार कर लिया और अपने राज्य वापस लौट गया।

प्रजा में एक बार फिर खुशी की लहर दौड़ गई थी। खुद के वृद्ध हो जाने के कारण भानु प्रताप देव ने अपने पुरोहितों के द्वारा राजकुमार सूर्या का राजतिलक करा दिया। अब सूर्या शीतल गढ़ का राजा सूर्य प्रताप देव था।

सूर्या अपनी रानी बाली को बहुत प्रेम करता था। यह बात राज्य में किसी से भी छुपी हुई नहीं थी। चंद्रा भी अपने बड़े भाई की यह कमजोरी बखूबी जानता था। एक दिन उसने बाली की जीवन लीला समाप्त करके ,सूर्या को विक्षिप्त कर खुद राजा बनने कि योजना बनाया।

बाली नित्य अपने महल के अंदर बने हुए बावड़ी में स्नान करने जाती थी। उस दिन राजकुमार चंद्रा ने एक दासी को अपने भरोसे में लेकर बाली को सांप से डंसवाने की योजना बनाया। जिस समय बाली बावड़ी की निचली सीढ़ी पर बैठकर स्नान कर रही थी। उसी समय बावड़ी के ऊपरी जगत से पिटारे में बंद एक भूखे और परेशान विषधर सांप को बाली के ऊपर गिरा दिया। इससे पहले की दासियां कुछ करतीं और समझ पातीं। सांप नीचे गिरते ही बाली के गले से लिपटकर अपने दांतो से गहरा निशान बना दिया। विषधर सांप को बाली के गले में लिपटा हुआ देखकर दासियां वहां से भाग खड़ी हुई।बाली तड़प कर वहीं पानी में गिर गई।

मेघा सांप के काटने की दर्द से तड़प रही थी। उसके मुख से नींद में ही चीख निकल गई, वह अपने पलंग पर उठ कर बैठ गई। तभी उसे ध्यान आया ,वह तो नींद में स्वप्न देख रही थी।

ओह ! यह कैसा सपना था ? तभी उसे ध्यान आया वह उस सूर्या कहानी की पुस्तक पढ़ते-पढ़ते सो गई थी। उसके मस्तिष्क में एक बार फिर सूर्या और बाली की कहानी घुमड़ने लगी। उसने अपने कांपते हुए हाथों से अपने बिस्तर पर पड़े हुए उस कहानी के पुस्तक के उस भाग को आगे पढ़ना शुरू किया जहां तक पढ़ते-पढ़ते उसे नींद आ गई थी।

यह क्या, कहानी के आगे की सारा भाग उसके सपने में देखे दृश्य से बिल्कुल मिल रही थी। वह पसीने से लथपथ हो गई। पुस्तक के आगे पन्ने को पढ़ना चाहती थी, मगर उसकी हिम्मत जवाब दे रही थी।

फिर भी अपने कांपते हुए हाथों से मेघा ने उस पुस्तक को पढ़ना शुरू किया।

कुछ दासियों ने हिम्मत दिखाकर डंडे से सांप को भगाया और बाली को बावड़ी से बाहर निकाला।

आनन-फानन में राजवैद्य को बुलाया गया ,परंतु मरने वाले को कौन वापस बुला सकता है ? राजवैद्य, राजहकीम, और न जाने राज्य के कितने बड़े-बड़े झाड़-फूंक करने वाले भी आयें , परन्तु वे सभी मिलकर भी बाली के शरीर से उस विषधर सांप का जहर नहीं उतार सकें।

बाली को मृत जानकार राजकुमार सूर्या चित्कार उठा। पर वक्त कहां ठहरने वाला था ? अब सूर्या बिल्कुल अकेला हो गया था। अब वह राज- काज बिल्कुल ही दूर होकर केवल बाली को ही सोचता रहता था। घंटों नदी के तट पर बैठकर उस नदी धारा को निहारा करता था ,जहां उसने बाली के शव को जल प्रवाह दिया था।

सूर्या की ऐसी हालत देख कर राजा भानु प्रताप देव ने अपने छोटे पुत्र राजकुमार चंद्र प्रताप देव को राजकाज की जिम्मेवारी दे दिया।

सूर्या को न खाने की चिंता रहती ,न पीने की। अब वह दिन-रात नदी के धारा को निहारा करता था। चंद्रा की चाल कामयाब हो गई थी। उसने अपने बड़े भाई को राजसिंहासन से हटाने का सटीक तरीका अपनाया था।

राजा भानु प्रताप देव ने राजवैद्य को बुलाकर राजकुमार सूर्या की चिकित्सा कराया। मगर कुछ भी फायदा नहीं हुआ। राजा ने सोचा एक बार फिर सुंदर राजकुमारी से इसका विवाह कर देते हैं, परंतु सूर्या इस बात के लिए सहमत नहीं हुआ। उसके दिलों-दिमाग पर अभी भी बाली ही छाई रहती थी।

ऐसे ही सर्दी-गर्मी,धूप-बरसा में तपता-गलता हुआ भूखा-प्यासा सूर्या ने एक दिन अपना शरीर त्याग दिया। परंतु मरकर भी वह अपनी बाली को भुला न सका। मृत्यु के उपरांत भी राजकुमार सूर्या को मुक्ति नहीं मिली । सूक्ष्म रूप में वह सदा ही बाली को ही ढूंढता रहता था।

मरने के बाद वह कई बरसों तक बाली की याद में भटकता रहा, 'परंतु बाली उसे अब कहां मिलने वाली थी ?'इसी तरह कई वर्ष गुजर गएं। लोग कहते हैं आज भी सूर्या की आत्मा किसी-किसी को ऋषिकेश में सूर्या घाट पर बैठा हुआ दिखाई दे जाता है।

कहानी की समाप्ति पर मेघा गहरी गहरी सांसे भरने लगी । ' ओह ! तो क्या आज भी सूर्या की आत्मा उस बाली के लिए भटक रही है ? पर उस बाली और सूर्या से हमारा क्या रिश्ता है ? क्यों मैं रंजीत को देखकर उसमें सूर्या को महसूस करती हूं ? 'सारे प्रश्न मेघा के मन मस्तिष्क पर डंके की तरह चोट कर रहे थे।

तभी उसकी अंतरात्मा से तरंगित करती हुई आवाज निकलने लगी, " मेघा ! तुम सब कुछ जानते हुए सच्चाई से मुंह नहीं मोड़ सकती हो , ? तुम ही बाली हो ! सूर्या की बाली तुम ही हो !! आज तक वह ऋषिकेश के सूर्या घाट पर तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था। वह रंजीत के अंतःकरण में

समाहित हो कर तुमसे मिलने को बेचैन है। तुम उसे गले लगाकर उसकी वर्षों की जुदाई में शीतल आनंद प्रदान करो।'

" नहीं ! यह झूठ है। बाली से मेरा कोई वास्ता नहीं। " मेघा चीख पड़ी।

' तुम ऊपर के मन से कितना भी इनकार कर लो ,लेकिन अपने दिल को झूठला नहीं सकती हो, तुम ही बाली हो! अगर तुम बाली नहीं ,तो सपने में सांप को काटने पर तुम्हें उसके दंश का दर्द क्यों होता ? क्यों सूर्या और बाली की कहानी को तुम सपने में देखा करती हो ? रंजीत ने यह पुस्तक तुम्हें ही क्यों दिया, जबकि यह पुस्तक कहीं ,भी किसी बुकस्टॉल पर नहीं मिलती है? अंत: तुम ही बाली हो।'

" हां ! मैं ही बाली हूं !! सूर्या की बाली मैं ही हूं !!!!" मेघा एक बार फिर जोर-जोर से चीख पड़ी। इस बार उसकी चीख सुनकर उसके माता-पिता उसके कमरे में आ गएं थे।

PART -15 अंतिम भाग

" बिटिया! क्या हो गया ? अभी तुम्हारे कमरे से तुम्हारी जोरों की आवाजें रही थी ? क्या तुम कोई सपना देख रही थी ?" अपनी मां अहिल्याबाई की आवाज सुनकर मेघा की स्मृति लौट आई। वह सोचने लगी, ' आखिर उसने क्या कहा, जो उसकी मां यहां आकर यह सब पूछ रही है ?'

" कुछ नहीं मां! हां, शायद में कोई सपना ही देख रही थी।" मेघा धीरे से बोली।

" आज भी तुम इस पुस्तक की कहानी पढ़ रहे थे ? मैंने मना किया है न ? इसे मुझे दो । मैं तुम्हारे पास से इसे ले जाकर बाहर रख देती हूं।" अहिल्याबाई मेघा के पलंग पर पड़ी हुई उस पुस्तक को देखकर उसे उठाकर अपने हाथ में ले ली।

" अब तो यह खत्म हो गई ।मैंने इसे पूरा पढ़ लिया। " मेघा न चाहते हुए भी कह गई।

" हां ,यही रात भर करती रहो। रोज दिन भर अलवर घूमो और रात को कहानियां पढ़ती रहो । फिर कहोगी सिर में दर्द हो रहा है ?"

" मैं तो कब का सो गई थी ,मां ! पर न जाने क्यों ,अभी ही मेरी नींद खुल गई है।"

" अच्छा, अब सो जाओ। अभी बहुत रात बाकी है।"

" ठीक है मां, मैं सो जाती हूं। आप लाइट बुझाते जाइए।" अहिल्याबाई बत्ती बंद कर अपने कमरे में चली गई। मेघा अपने बिस्तर पर सोने की कोशिश कर रही थी।

आंखें बंद करते ही मेघा को सूर्या का अस्पष्ट चेहरा उसके आंखों के सामने बनने लगता था। वह उसे रूप देने की कोशिश करती तो उसे रंजीत का चेहरा दिखाई देने लगता था।

यह मुझे क्या हो गया। अगर सूर्या आज भी ऋषिकेश में सूर्या घाट पर अपनी बाली का इंतजार कर रहा है ,तो फिर यह रंजीत कौन है , जिसका चेहरा बार-बार मेरे आंखों के सामने घुमड़ने लगता है ?' परंतु मेघा के मन के प्रश्न का उसके मस्तिष्क ने कोई उत्तर नहीं दिया।

काफी देर तक लेटी हुई मेघा यूं ही रंजीत और बाली के बारे में सोचती रही। फिर न जाने कब उसे नींद आ गई थी। अलार्म की घंटी से सुबह उसकी नींद खुली। आंख खुलते ही एक बार फिर उसकी स्मृति ताजी हो गई । वह रात्रि के अपने सपने के बारे में सोचती हुई सोचने लगी।

' क्या आज मुझे फिर रंजीत से मिलने जाना चाहिए ? उसने मुझे पुस्तक को पूरा पढ़ने के लिए कहा था, मैं उस पुस्तक को पूरा पढ़ चुकी हूं । अब आगे क्या ...?'

फिर उसने निश्चय किया, ' हां ,आज फिर मैं रंजीत से मिलने जाऊंगी । मगर वह मिलेगा कहां ..... ? अपने कबीले में ! उसने बताया था ,मुख्य मार्ग पर थोड़ी दूर आगे उसका कबीला है।'

बिस्तर से उठते ही उसके पैरों पर पंख लग गए। न जाने क्यों ,रंजीत से मिलने के लिए एक अलग प्रकार की ही खुशी, उसके मन में बनी हुई थी।

उसने मीता को खबर किया, आज फिर हम रंजीत से मिलने चलेंगे ?

मेघा की बात सुनकर नीता हैरान हुई। फिर भी वह उसके साथ चलने की हामी भर दी थी।

मेघा सुबह जल्दी तैयार होकर उत्सुकता वश मीता को लेने उसके घर पहुंच गई। कुछ ही देर में मीता उसके साथ हो गई। दोनों सहेलियां रंजीत के बताए हुए स्थान पर बढ़ने लगीं।

मुख्य सड़क पर पहुंचने से पहले ही रंजीत गांव की ओर आता दिखाई दिया।

मेघा उसे देखकर चहक उठी, " अरे वाह ! धन्य हो तुम! तुम तो याद करते ही मिल जाते हो।"

" मैं भी आपसे ही मिलने जा रहा था ,मेम साहब! आप मिल गई हैं, चलिए आज हम पहाड़ी की ओर चलते हैं।"

रंजीत की बात सुनकर मेघा ने कोई प्रश्न नहीं किया । उसके पगडंडी पर मुड़ते ही वह भी उसके पीछे हो गई । मीता उसका चेहरा देखते हुए आंखों से ही पूछने की कोशिश कर रही थी , कि वह पहाड़ी की ओर कहां जा रही हैं ? परंतु मीता के आंखों के प्रश्न से बेखबर मेघा रंजीत के साथ पहाड़ी की ओर बढ़ी जा रही थी।

अब वे तीनों पहाड़ी के बिल्कुल पास पहुंच चुके थे । पहाड़ी के मंदिर पर जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थी ।सीढ़ियों से होते हुए वे तीनों पहाड़ी पर मंदिर की ओर बढ़ने लगे। जब पहाड़ी पर पहुंचकर कुछ दूर आगे बढ़े हैं ,तो उन्हें एक खंडहर सा किला दिखाई दिया।

रंजीत आगे-आगे चल रहा था और कभी कभी पीछे मुड़कर मेघा को देख लेता था। मेघा सम्मोहित सी रंजीत के पीछे बड़ी चली जा रही थी। अब वे तीनों किले के दरवाजे पर थे। मेघा को याद आया, जब वह जयपुर से घर आई थी, तो मंदिर घूमकर लौटते समय वह अपनी सहेलियों के साथ इस टूटे-फूटे हुए खंडहर से किले में भी घूमने चली गई थी।

किले में अंदर बढ़ते हुए वे तीनों उसके आंगन में आ गएं। फिर सीढ़ियों के द्वारा छत पर पहुंच गएं। किले की छत बहुत बड़ी थी। अब भी वहां का निर्माण बहुत कुछ सलामत था।

रंजीत ने कहा, " बैठिए ! हम यहीं बैठकर थोड़ी देर बाद में करेंगे ,फिर मैं आपको मंदिर ले चलूंगा।" ऐसा कहने के बाद रंजीत वही पालथी मारकर बैठ गया । मेघा भी यंत्रवत उसके शब्दों का अक्षरस पालन कर रही थी।

" क्या आपको यह जगह याद है ?"

" नहीं तो ? मुझे तो कुछ भी याद नहीं आ रही है !"

" वह देखिए ! वहां दूर उस सड़क के किनारे का भाग ! कभी वहां पर आपके बाबा का कबीला होता था।" रंजीत अपनी उंगली से बहुत दूर का सड़क दिखाता हुआ बोला।

" मेरे बाबा का ?"

" हां आपके बाबा राम सिंह का !"

" तो क्या मेरे बाबा राम सिंह थे ?

" आप कौन हो, आपको मालूम नहीं ?" रंजीत की बात सुनकर मेघा कुछ सोचने लगी।

" नहीं ! मुझे तो ऐसा कुछ भी याद नहीं है।"
मेघा अपने माथे पर बल देते हुए बोली।

" मेरी आंखों में देखिए।" मेघा रंजीत की आंखों में देखने लगी।

" हां, मुझे याद आया,मैं बाली हूं .... मुझे सब याद आ गया।"

मेघा सम्मोहित सी कहने लगी, " वह देखिए, वह दूर ! हमारा महल , और उसके आगे हमारी बावड़ी थी। महल के अंदर से ही बावड़ी तक जाने के लिए रास्ता था। उस दिन मैं उसी बावड़ी में नहा रही थी। तभी अचानक ऊपर से गिरकर एक सांप मेरे गले में लिपट गया था और फिर....."

" रंजीत की आंखों में अश्रु धारा बहने लगा। आसुओं से झिलमिल करते हुए अपनी आंखों की पलकें कसकर बंदकर वह अपनी आंखों से आंसुओं को निचोड़ने की कोशिश करता हुआ उसे जोर से बंद करके खोला और फिर कहने लगा," अरे वाह ! ..... हे माता चंडिका! आपकी बड़ी कृपा है ,मुझ पर जो मेरी बाली को सब कुछ याद आ गया। ..... और हम अभी जहां बैठे हैं यह......."

" यह सैनिक किला आपके पिता के मुख्यमंत्री के कहने पर उन्होंने हमारे साथ आपकी विवाह के बाद आपको भेंट में दिया था। आपने यहां बंजारे युवाओं की संगठित सेना बनाया था। जो इस पहाड़ी पर युद्धाभ्यास करती थी और इस किले की रखवाली करती थी। हम दोनों अक्सर यहीं स्थान पर बैठकर बातें करते थे ,जहां आज बैठे हुए हैं।

" हां, मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई, सचमुच आपको सारी बातें याद आ गई है। फिर भी उस पुस्तक में आपको अंत की सारी कहानी नहीं मिली होगी, क्योंकि आगे की कहानी मेरे अलावा कोई नहीं जानता है। मैं अंत समय में नदी तट से उठकर यहीं, इसी किले में आ गया था। मैं यहीं इसी छत पर बैठकर आपको याद किया करता और आपको बुलाने की ईश्वर से प्रार्थना करता था। आपकी याद में भूखा-प्यासा ,मैं यहीं छूपकर बैठा हुआ आपका इंतजार करता-रहता था।फिर एक दिन भूख-प्यास मेरी प्राण निकल गई थी।

तब मैं कभी वहां ऋषिकेश में गंगा तट पर बैठता ,तो पल में यहां आकर आपका इंतजार करने लगता था। कई सौ वर्षों के बाद उस दिन जब आप इस किले में आई तब मेरी इंतजार खत्म हुई थी। फिर मैं रोज रात्रि को आपको यहां लेकर आता और पूरी रात आपको निहारता था। फिर एक दिन आपके गुरुदेव ने मुझे आपके घर जाने पर भी पाबंदी लगा दिया था।"

" ओह ! आप मुझे आज भी इतना प्रेम करते हैं ? मेरे लिए इतने वर्षों तक आपने इंतजार किया ?" मेघा की आंखों में अश्रु धारा बहने लगें।

" हां !और सदा ही करता रहूंगा।"

" आपने जन्म ग्रहण क्यों नहीं किया ? आपके इस तरह रंजीत के अंतःकरण में विराजमान होने से हमारा मिलन कैसे होगा ? हम दांपत्य जीवन के सुख कैसे ले सकेंगे ?"

" एक बार मैंने आपको देख लिया, आपसे बातें कर लिया। अब मुझे इस प्रेत योनि से मुक्ति मिल

जाएगी। मैंने इतने बरसों की साधना के पश्चात मुक्ति की शक्ति प्राप्त कर लिया है। मेरी इच्छा से मैं जब चाहूं, तब मेरी मुक्ति संभव है। समझिए मैं मुक्त ही हो गया हूं। अब मैंने अपनी चेतना को रंजीत की चेतना से एकाकार कर दिया। मेरी आत्मा और रंजीत की आत्मा एक हो गई है। रंजीत की आंखों में आप सदा मुझे महसूस करेंगे। मैंने जो आपकी स्मृति आज आपके मन मस्तिष्क में जगाया है, वह सदा के लिए अमिट हो जाएगी। आप हर वक्त रंजीत में ही मुझे महसूस कर सकेंगे। आप देखना इस बार हमारी शादी में कोई अड़चनें नहीं आएगी।"

" वह कैसे ? जहां तक मैं समझती हूं , अड़चने तो अब भी है। इस बार भी पूर्व की तरह चुनौतियां कम नहीं है।" मेघा ने चिंता व्यक्त की।

" इस बार ऐसा कुछ नहीं होगा। बस आप अपने पिताजी से रंजीत के साथ रिश्ते के लिए पूछिएगा, वे कभी भी ना नहीं करेंगे। यही तो मेरी साधना है। जब तक आप अपनी आयुष्य पूर्ण नहीं कर लोगी, आप सदा ही सूक्ष्म में रूप में मुझे अपने आसपास ही महसूस करोगी। चलिए मंदिर में माता का आशीर्वाद लेने के बाद हम घर चलेंगे।"

तीनों मंदिर की ओर बढ़ने लगें। वहां माता चंडिका का आशीर्वाद लेकर वे तीनों अपने घर वापस आ गएं।

कुछ दिनों बाद मेघा अपने माता-पिता को खुद के और रंजीत के बारे में सारी बातें बताई। उन दोनों ने खुशी-खुशी इस रिश्ते की सहमति दे दिया। धूमधाम से मेघा और रंजीत का विवाह संपन्न हुआ। वे अपने माता-पिता के आशीर्वाद से सुखद दांपत्य जीवन का आनंद ले रहे थे।

इति ।